टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक: 37 जुलाई–दिसंबर, 2025

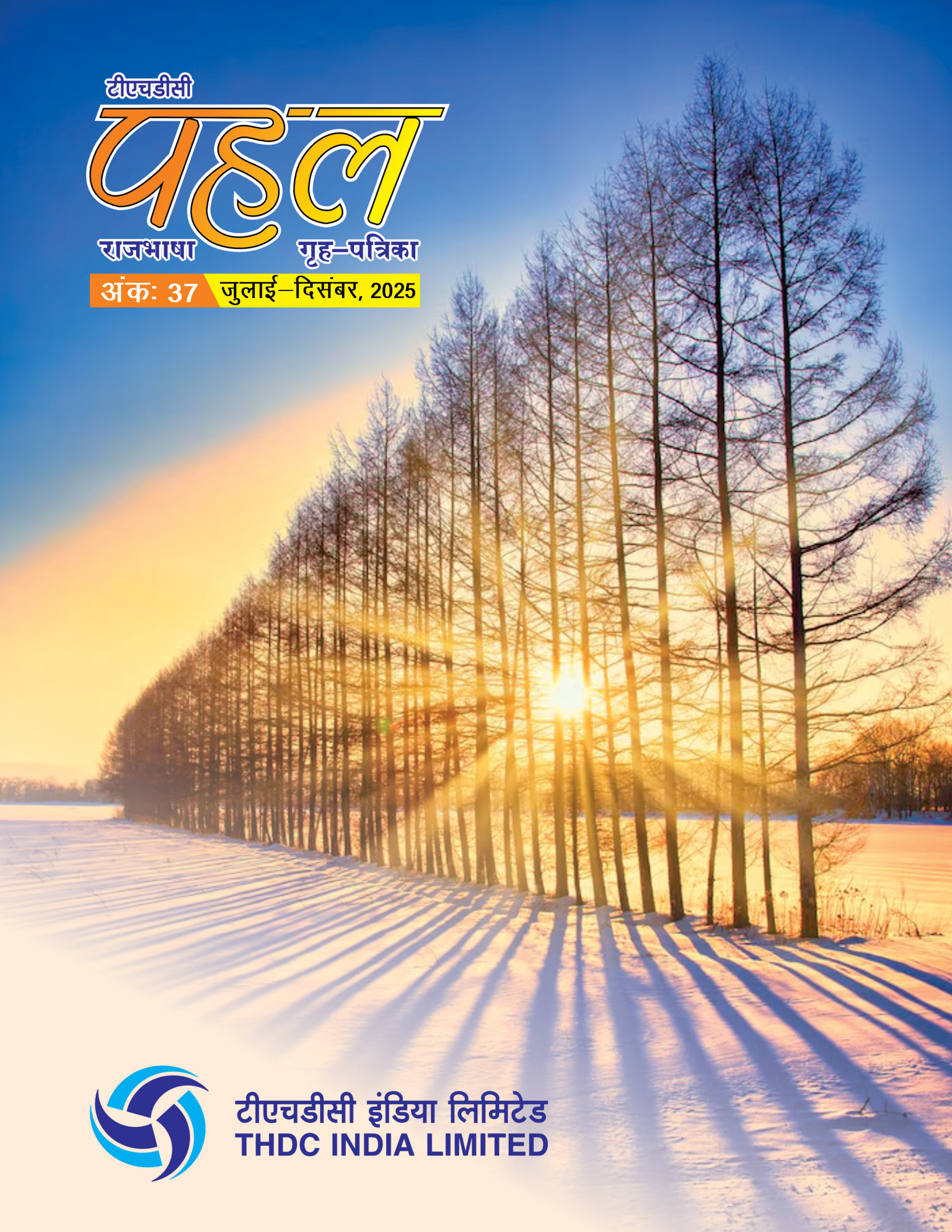

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

कारपोरेट कार्यालय में 31 दिसंबर, 2025 को समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 29 दिसंबर, 2025 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री सिपन कुमार गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा की गई।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' के 37वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। नव वर्ष 2026 का आगमन हो चुका है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सर्वप्रथम आप सभी पाठकों को इस नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं। मेरी ईश्वर से कामना है कि नए वर्ष में आप अपने परिवार सहित सुखी रहें, स्वस्थ रहें, आनंदित रहें और निगम के भावी लक्ष्यों को पूरा करने में अपना योगदान देते रहें।

जैसा कि सर्वविदित है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड का मूल व्यवसाय विद्युत उत्पादन करना है। निगम अपने इस व्यवसाय में वृद्धि करने के लिए कटिबद्ध एवं प्रतिबद्ध है। हमारी प्रचालनात्मक विद्युत परियोजनाएं जहां एक ओर अपनी पूरी क्षमता के साथ राष्ट्र की विद्युत आवश्यकताओं को पूरा करने में महति भूमिका का निर्वहन कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड उत्तराखंड के साथ–साथ देश के विभिन्न राज्यों में नई–नई विद्युत परियोजनाएं स्थापित करने की दिशा में तेज गति से कार्य कर रही है। हमारे भावी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए हमें इस नए वर्ष में अपने–अपने कार्य की पूर्व परिपाटियों का पुनर्विलोकन कर आगे बढ़ना होगा, तभी हम भावी उपलब्धियां प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करने में सफल हो पाएंगे।

हमें अपनी व्यावसायिक गतिविधियों के साथ–साथ अपने संवैधानिक एवं सांविधिक दायित्वों का निर्वहन भी कुशलतापूर्वक करना चाहिए। इनमें निगम में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सुदृढ़ता लाना भी शामिल है। भारत में सर्वाधिक लोगों के द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली भाषा हिंदी ही है। संविधान निर्माताओं का हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वपन तभी साकार हो सकता है, जब सर्वप्रथम यह सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के रूप में पूर्ण रूप से स्थापित हो जाए। हम सब मिलकर इस दिशा में भी मेहनत और लगन से कार्य करें और सरकारी कामकाज में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के अनुरूप हिंदी का प्रयोग करें।

भारत सरकार हिंदी को राष्ट्रभाषा के साथ–साथ विश्वभाषा बनाने के अभियान में भी जुटी है। इसके प्रचार–प्रसार के लिए मॉरीशस में ''विश्व हिंदी सचिवालय'' की स्थापना की गई है। प्रत्येक वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। मैं आप सभी को विश्व हिंदी दिवस की भी हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं। हमें गर्व करना चाहिए कि हिंदी अब भारत की ही भाषा नहीं अपितु यह विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

आइए। हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के साथ राष्ट्र के निर्माण में अपनी महति भूमिका का निर्वहन निरंतर करते रहेंगे।

सिपन गर्ग

(सिपन कुमार गर्ग)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) का संदेश

प्रिय साथियो,

नए वर्ष में हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' का यह 37वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और कार्यान्वयन की दिशा में नित नए सौपान स्थापित कर रही है। कारपोरेट कार्यालय के साथ–साथ अधीनस्थ यूनिटों एवं कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। जिसके परिणामस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा अनेक मंचों पर निगम को एवं इसके यूनिट/कार्यालयों को पुरस्कृत कर मान्यताएं दी जा रही हैं।

यह हर्ष की बात है कि वर्ष 2024 में निगम को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने के बाद, हाल ही में राजभाषा विभाग द्वारा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के एनसीआर कार्यालय, कौशांबी को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों के अंतर्गत तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत करने का निर्णय लिया गया है। इसके अतिरिक्त खुर्जा एसटीपीपी को वर्ष 2025 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बुलंदशहर के द्वारा प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। मैं सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बहुत–बहुत बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि निगम के अन्य कार्यालय भी इसी प्रकार लगन एवं मेहनत से कार्य करते हुए राजभाषा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने निगम की क्षमताओं को देखते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार एवं टिहरी के संचालन का दायित्व भी सौंपा हुआ है जिसका निर्वहन पिछले लगभग 08 वर्षों से सफलतापूर्वक किया जा रहा है। वर्ष 2025 में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के द्वारा संचालित की जा रही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार को भी प्रशंसनीय श्रेणी में पुरस्कृत किया गया है। इसके लिए मैं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूं। मेरा मानना है कि इस प्रकार की शुरूआत से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के मध्य प्रतिस्पर्धी वातावरण का सृजन होगा और वे राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अपनी ओर से पूरा प्रयास करेंगे।

मैं पुनः आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने समर्पित भावों से निगम के लक्ष्यों को पूरा करने के प्रति कृत संकल्पित होंगे।

(डॉ अमर नाथ त्रिपाठी)
मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका
(अंक–37)

मुख्य संरक्षक
श्री सिपन कुमार गर्ग
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

सलाहकार एवं मार्गदर्शक
श्री अनिल प्रीतम मुंडू
उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री संतोष तुकाराम टेलकीकर
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

श्री नरेश सिंह
सहायक अधिकारी (राजभाषा)

श्रीमती हेमलता कौर एवं ममता गौड़
कनि. अधिकारी (राजभाषा)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेल: pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख / यात्रा वृतांत / लघुकथा / संस्मरण

1. जय हिन्द, वंदे मातरम् 5
2. देश के सांस्कृतिक विकास में हिंदी की भूमिका 6
3. डिजिटल एजिंग: निरंतर कनेक्टिविटी की छिपी कीमत 8
4. बादलों के पार, देवताओं के बीच रुद्रनाथ यात्रा 11
5. सोशल मीडिया 12
6. स्मृति शेष 13
7. सतर्कता: व्यक्तिगत जिम्मेदारी से सामाजिक संस्कार तक .. 14
8. हिंदी अनुभाग की ओर से 16

कविताएं / क्षणिकाएं / विचार

9. खुद से मुलाकात 19
10. मेरे गांव की सड़क 20
11. अपना देश अपना पहाड 21
12. अंतरराष्ट्रीय वाटर स्पोर्ट्स कप का भव्य आगाज 21
13. कठपुतली जीवन 22
14. पहली बारिश 22
15. ख्वाईशों का सफर 23
16. जीवन 23
17. समय 24
18. ऋत्विक 24

राजभाषा गतिविधियां

19. कारपोरेट कार्यालय में हिंदी माह का आयोजन 25
20. टिहरी एवं कोटेश्वर में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 30
21. खुर्जा एसटीपीपी में हिंदी पखवाड़ा आयोजन 31
22. कौशांबी में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 31
23. वीपीएचईपी पीपलकोटी में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 32
24. अमेलिया कोल माइन में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 33
25. टुस्को लिमिटेड में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 33
26. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 34
27. हिंदी संगोष्ठी का आयोजन 36
28. राजभाषा अधिकारियों हेतु हिंदी संगोष्ठी का आयोजन 36
29. प्रतियोगिताओं का आयोजन 37
30. नराकास, हरिद्वार की 40वीं अर्धवार्षिक बैठक 38
31. नराकास, टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक संपन्न 39

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

टीएचडीसी के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई जी का 15 नवंबर, 2025 को आकस्मिक निधन हो गया। वे 59 वर्ष के थे। उनके इस असामयिक निधन से संपूर्ण टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड परिवार शोक संतप्त है एवं ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

श्री विश्नोई टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में वर्ष 1989 में अभियंता के पद पर आए। अपने कार्य के प्रति जुझारू व्यवहार और परिणामोन्मुखी होने के फलस्वरूप उन्होंने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में निरंतर पदोन्नति प्राप्त करते हुए 01 सितंबर, 2019 को निदेशक (तकनीकी) एवं 06 अगस्त, 2021 को निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का पदभार ग्रहण किया। श्री विश्नोई ने 2022–23 में एनएचपीसी एवं नीपको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाला। श्री विश्नोई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से भी जुड़े रहे। वर्ष 2023 में उन्होंने ब्रिक्स चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष पद पर रहे एवं इंटरनेशनल कमीशन ऑन लार्ज डेम की बांधों की भूकंपीय सुरक्षा पर बनी तकनीकी समिति में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

अपने व्यस्त व्यावसायिक कार्यों के बावजूद टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति उनका गहरा लगाव था। वे एक अच्छे अभिभावक के रूप में न केवल सबका मार्गदर्शन करते रहे, साथ ही कर्मचारियों की भलाई एवं कल्याण के लिए भी समर्पित भाव से जुटे रहे। उन्होंने अपना पूरा जीवन टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए समर्पित कर दिया। हमें उनकी कार्यशैली का अनुसरण कर निगम की उन्नति के लिए निरंतर प्रयासरत होना चाहिए, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

जय हिन्द, वंदे मातरम्

लेख

प्रिया कुमारी
सदस्य–हिंदी सलाहकार समिति
विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार

भारतीय संविधान के तहत हिंदी भाषा का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि इसे देश की भाषायी विविधता और एकता के बीच एक सेतू के रूप में स्वीकार किया गया है। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया है। हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाना, उसका विकास करना तथा राजभाषा हिंदी को भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना संघ का कर्तव्य है। भारतीय संविधान के तहत हिंदी को प्रशासनिक भाषा के साथ–साथ पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली संपर्क भाषा के रूप में स्थापित किया जाना है। प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस इसी संवैधानिक स्वीकृति के सम्मान में मनाया जाता है।

मेरा लेख राजभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार एवं विकास में एक प्रयास है, आशा करती हूं कि मेरा यह आलेख राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में सार्थक भूमिका निभाएगा। राजभाषा हिंदी का वैश्विक स्तर पर प्रचार–प्रसार करना हमारा राष्ट्रधर्म है। ''हिंदी'' को संपर्क भाषा इसलिए स्वीकार किया गया क्योंकि वह देश को जोड़ने की क्षमता रखती है। हमारी मातृभाषा हिंदी न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि हमारी संस्कृति और विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका हम भारतीय सदैव सम्मान करते हैं।

वर्तमान युवा पीढ़ी में मातृभाषा के प्रति लगाव को बढ़ावा देना -

हम संकल्पबद्ध होकर अपने संस्कार, अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपने साहित्य, कला और अपनी व्याकरण को संरक्षित और सवंर्धित करने का संकल्प लेकर निकले हैं। वर्तमान के युवाओं के बीच हिंदी को संपर्क भाषा, जनभाषा, तकनीक की भाषा के प्रति गहरा लगाव स्थापित करने का समय है। अपने बच्चों को हिंदी में प्रवीण बनाना सिर्फ भाषा को संरक्षित करना नहीं, अपितु यह उन्हें अपनी पहचान और अपनत्व की भावना देना भी है। राजभाषा हिंदी को दैनिक जीवन में कहानी कहने और कला मूल्यों में शामिल करके यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम वैश्विकृत दुनिया में पनपते हुए अपनी भाषाई जड़ों से जुड़े रहें।

प्रोत्साहन-

हिंदी पखवाड़ा और विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं को हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाता रहा है। स्वामी विवेकानंद जी ने अपनी मातृ भाषा के प्रति सम्मान और महत्व के बारे में बताते हुए युवा पीढ़ियों को अनेक संदेश दिए है। उन्होंने युवाओं के लिए भाषा विशेष के रूप में हिंदी भाषा के बारे में कई महत्वपूर्ण संदेश दिए हैं। उनके विचारों का सार यह है कि युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति की जड़ों और अपनी मातृभाषा पर गर्व करना चाहिए। स्वामी जी का मानना था कि जो युवा अपनी भाषा और संस्कृति का सम्मान नहीं करते, वे कभी राष्ट्र का उत्थान नहीं कर सकते। उन्होंने युवाओं को अपनी पहचान के प्रति सचेत रहने का संदेश दिया।

सरलता ही सर्वश्रेष्ठ है:– स्वामी जी ने युवाओं को सलाह दी कि वे ''पांडित्य'' दिखाने के लिए कठिन भाषा का प्रयोग न करें। उनके अनुसार सरल और स्पष्ट भाषा ही विचारों का सबसे अच्छा वाहक है और वही जनता के हृदय तक पहुंचती है।

संस्कृत और आधुनिकता का मेल :– स्वामी जी ने युवाओं को संदेश दिया है कि वे ''संस्कृत'' (जो हमारी सभी भाषाओं की जननी है) के गौरव को समझें लेकिन अपनी मातृभाषा हिंदी जैसी जनभाषाओं के माध्यम से आधुनिक विज्ञान और विचारों का प्रचार प्रसार करते रहें।

राष्ट्रीय एकता का सूत्र :– उनका मानना था कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं बल्कि पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली शक्ति है। युवाओं को इसका प्रयोग समाज को जोड़ने और कुरीतियों को मिटाने के लिए करना चाहिए।

उनका सबसे प्रसिद्ध आह्वानः– ''उठो जागो और तब तक मत रूको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'' युवाओं को अपनी संस्कृति और भाषाई विरासत को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देती है।

युवा पीढ़ियों को संदेश देने के तात्पर्य से स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से जुड़ा एक किस्सा याद आता है-

सन् 1899 हमारे ज्ञान के पुरोधा स्वामी विवेकानंद जी जब अमेरिका पहुंचे तो उनसे एक अमेरिकन ने पूछा ''हाऊ आर यू स्वामी जी'' इस पर स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि ''मैं अच्छा हूं'' अमेरिकन को लगा कि शायद स्वामी जी को अंग्रेजी नहीं आती इसलिए हिंदी में उत्तर दे रहे हैं। इसलिए उसने फिर से हिंदी में सवाल पूछ लिया, उसने टूटी–फूटी हिंदी में स्वामी जी से पूछा कि आपको अमेरिका आकर कैसा लग रहा है? इस बार स्वामी जी ने उसे अंग्रेजी में जवाब दिया ''आई एम फिलिंग गुड, यूवर कंट्री इज वेरी ब्यूटीफूल'' इसे सुन अमेरिकन दंग रह गया। उसने कहा कि स्वामी जी मैंने आपसे जब अंग्रेजी में प्रश्न किया तो आपने हिंदी में जवाब दिया और जब मैंने हिंदी में पूछा तो आप अंग्रेजी में जवाब दे रहे हैं कुछ समझा नहीं।

स्वामी जी ने बड़े ही सहज तरीके से कहा, जब तुमने अपनी मातृभाषा में सवाल किया तो, मैंने अपनी मातृभाषा का सम्मान किया, लेकिन जब तुमने मेरी मातृभाषा का सम्मान करते हुए हिंदी में प्रश्न किया तो मैंने भी तुम्हारी मातृभाषा का सम्मान करते हुए अंग्रेजी में उत्तर दिया।

स्वामी जी के इस विचार से अमेरिकी इतना प्रसन्न हुआ कि इस घटना का जिक्र अगले दिन अमेरिका के अखबारों में पहले पृष्ठ पर छापा गया।

"वेदान्त की गूंज उठी जहां, वहां हिंदी का भी मान बढ़ा,
विवेकानन्द के वचनों से राजभाषा का पथ प्रशस्त हुआ।
संस्कृत जिसकी जननी है, उस हिंदी को अपनाया था,
भारत की एकता सूत्र उन्होंने इसमें पाया था।"

****

देश के सांस्कृतिक विकास में हिंदी की भूमिका

लेख

संतोष तुकाराम टेलकीकर
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

भाषा संस्कृति की संवाहिका है। भाषा के बिना देश की संस्कृति का विकास असंभव है। देश के विकास में भी भाषा के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। भारत की संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है। अगर यह कहें कि हिंदुस्तान की संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी संस्कृतियों में से एक है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। समय के साथ संस्कृति में परिवर्तन भी आता है और यह समृद्ध भी होती है। परिवर्तनों को हमने स्वीकार भी किया है। कहा जाता है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। देश आजादी के अमृत महोत्सव का उत्सव मना रहा है। हमने देखा भी है और अनुभव भी किया है कि देश को आजाद कराने से लेकर देश को आज भी विकसित बनाने की राह में हिंदी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। लाल किले की प्राचीर से हमारे प्रधानमंत्री जब हिंदी में भाषण देते हैं तब उनको केवल भारत ही नहीं विश्व के हर कोने के लोग सुनते हैं, तब हिंदी भाषा का गौरव और स्वाभिमान बढ़ जाता है। देश में अनेक भाषाएं हैं लेकिन विविधता में एकता का प्रधिनिधित्व हिंदी भाषा ही करती है। देश के विभिन्न स्थानों पर किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है तो उसमें सर्वोपरि हिंदी ही रहती है। साथ ही देश के शिक्षा संस्थानों में भी हिंदी भाषा का ही बोलबाला दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति में अभिवादन की परंपरा है जिसमें प्रणाम और नमस्कार भारतीयता की पहचान है। जब किसी देश के प्रधानमंत्री द्वारा जनता के साथ 'मन की बात' हिंदी भाषा

के माध्यम से की जाती है तो निश्चित रूप से हिंदी भाषा के सम्मान में 'चार चांद' लग जाते हैं, इन्हीं बातों से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

विश्व के विभिन्न स्थानों पर हिंदी से जुड़े कार्यक्रम या सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है और मेरा दावा है कि हिंदी भाषा के अलावा अन्य किसी भी भाषा के सम्मेलनों को इतने बड़े पैमाने पर श्रोता नहीं मिल सकते हैं जितने कि हिंदी भाषा में सुनने वालों की संख्या है। लेकिन वास्तविक बात तो यह भी है कि वर्तमान समय में हिंदी की पढ़ाई कम होती जा रही है। अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। चिंता का विषय यह है कि हमारी आनेवाली पीढ़िया हमारी संस्कृति को याद करेगी या नहीं क्योंकि भाषा ही संस्कृति की संवाहक है और इसका अस्तित्व बना रहना जरूरी है। इस दिशा में हमें गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। हिंदी भाषा को केवल 14 सितंबर तक सीमित न रखते हुए उसे जन की और मन की भाषा बनानी पड़ेगी। भारत की सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखने वाली भाषा के लिए हमें अधिक जागरूक और सजग बनने की जरूरत है। किसी भी राष्ट्र के विकास में भाषा की भूमिका सर्वोपरि रहती है। साथ ही किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए एक भाषा का होना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उस देश की उन्नति। भाषा भी राष्ट्र का प्रतीक है।

भाषा केवल आदान–प्रदान का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह संस्कृति का आदान–प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। किसी भी राष्ट्र के विकास में एक भाषा का योगदान तो है ही, साथ–साथ उस राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का महत्वपूर्ण कार्य भी भाषा करती है। हिंदी भाषा हमारी संस्कृति का प्रतिबिंब है। भारत की सबसे लोकप्रिय, बोली जाने वाली और समझने वालों की तुलना में हिंदी भाषा ही प्रथम स्थान पर है। लेकिन वर्तमान समय में हमें भाषा के विस्तार को बढ़ाने की जरूरत है और यह तभी संभव हो सकता जब हम नई तकनीकों को अपनाते हैं। यह युग तकनीक का युग है, जिसने इसे अपनाया नहीं वह दुनिया की दौड़ से पिछड़ जाएगा। इसलिए यह बात भाषा पर भी लागू होती है। हमें हिंदी भाषा के बदलाव और तकनीकी साधनों का प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता ही नहीं जरूरत भी है।

जब हिन्दुस्तान की आजादी के लिए राष्ट्रीय आंदोलनों में एक भाषा की आवश्यकता पड़ी तब हिंदी भाषा को ही सर्व सहमति से सभी की स्वीकार्यता मिली। इसमें केवल हिंदी प्रदेश के लोगों ने ही नहीं अपितु देश के हर कोने से इसे स्वीकारा गया। सरलता और सहजता के कारण ही हिंदी भाषा ने जनसामान्य के हृदय में अपना स्थान बना लिया है और यही कारण है कि हिंदी भाषा के साहित्य में भारत के विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अनुवाद प्राप्त होता है। इस साहित्य में देश की सांस्कृतिक धरोहर का विस्तार देखने को मिलता है इसलिए हिंदी भाषा का साहित्य समृद्ध होता हुआ नजर आता है। हिंदी फिल्म जगत ने भारत की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व पटल पर रेखांकित किया है। विभिन्न क्लासिक फिल्मों के माध्यम से हिंदुस्तान की संस्कृति, परंपरा, रीति–रिवाजों, रहन–सहन, और सबसे महत्वपूर्ण है भाषा की विशेषता। एक समय था कि हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण उपन्यास चंद्रकांता को पढ़ने के लिए बहुत से लोगों ने हिंदी सीखी थी। उसी तरह भारत के ही नहीं विश्व के विभिन्न देशों के लोगों ने हिंदी फिल्मों को देखने और समझने के लिए हिंदी भाषा सीखी। मनोरंजन जगत के साथ–साथ भारत के पर्यटन जगत ने भी हिंदुस्तान की सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखा है। देश–विदेश के पर्यटक जब भारत की यात्रा करते हैं तब उस स्थान की विशेषताओं को हिंदी भाषा में रेखांकित किया हुआ पाते हैं। इसीलिए हिंदी भाषा सांकृतिक विरासत की धरोहर है। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा की पढ़ाई की जाती है। भारत में देश–विदेश से विद्यार्थी हिंदी भाषा का अध्ययन करने के लिए हर वर्ष आते हैं, जैसे आगरा का 'केंद्रीय हिंदी संस्थान' आदि। ये विद्यार्थी हिंदी भाषा के माध्यम से हमारी संस्कृति भी सीखते और अपनाते भी हैं।

भारत बहुभाषी राष्ट्र है, इसके बावजूद देश के सांस्कृतिक विरासत के विस्तार की बात आती है तो बेशक हिंदी भाषा का ही चुनाव करना पड़ेगा। बहरहाल यह बात स्पष्ट है कि देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण ही नहीं सर्वोपरि है।

****

डिजिटल एजिंगः निरंतर कनेक्टिविटी की छिपी कीमत

लेख

आशुतोष कुमार आनंद
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

21वीं सदी मानवीय इतिहास का वह मोड़ है जहाँ तकनीक ने न केवल जीवन बदला, बल्कि जीवन–शैली तक पुनः परिभाषित कर दी। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया–सभी ने सुविधा और गति का नया अर्थ दिया। दूरियाँ मिट गईं, सूचनाएँ पलक झपकते मिल जाती हैं, और दुनिया "ग्लोबल विलेज'' में बदल गई है। लेकिन इस सुनहरी चमक के नीचे एक गहरी, अदृश्य छाया भी है जिसे "डिजिटल एजिंग" कहा जा रहा है।

यह वह प्रक्रिया है जिसमें मानव शरीर, मन, व्यवहार, और सामाजिक संवेदना समय से पहले थकान, झुर्रियों, भावनात्मक शुष्कता, मानसिक क्षय और रिश्तों के क्षरण की ओर बढ़ने लगती है। यह सिर्फ एक कॉस्मेटिक शब्द नहीं–यह मानवता की धीमी, लेकिन सतत थकान का नाम है। डिजिटल चमत्कारों के इस युग में, जहाँ जीवन स्क्रीन के इर्द–गिर्द घूमता प्रतीत होता है, हममें से अधिकांश ने अनजाने में एक "तेजतर्रार बुढ़ापे" वाले सफर के लिए खुद को साइन–अप कर दिया है। हम हाइपर–कनेक्टेड हैं, हमेशा ऑनलाइन हैं, नोटिफिकेशनों से लगातार घिरे रहते हैं और अपने गैजेट्स से चिपके रहते हैं। तकनीक ने निस्संदेह हमारी दुनिया को बदल दिया है, लेकिन इसके साथ एक अदृश्य संकट भी आया है जो हमारे शरीर, मन और सामाजिक ढांचे को भीतर ही भीतर बदल रहा है। इस नई घटना को विशेषज्ञ आज डिजिटल एजिंग कह रहे हैं।

डिजिटल एजिंग क्या है?

डिजिटल एजिंग केवल शारीरिक त्वचा के बदलने तक सीमित नहीं है। यह एक समग्र गिरावट है जो डिजिटल उपकरणों के लंबे और अत्यधिक प्रयोग से तेजी से बढ़ती है। इसमें त्वचा का समय से पहले बूढ़ा होना, मानसिक थकान, मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट, सामाजिक कौशल में क्षरण और शारीरिक जीवंतता में कमी शामिल है। ये सब स्मार्टफोन, टैबलेट, लैपटॉप और स्मार्टवॉच जैसे गैजेट्स पर हमारी निर्भरता की वजह से होते जा रहे हैं।

1. डिजिटल एजिंग की अवधारणा–तकनीक की कीमत मानव विकास पर

आज स्क्रीन हमारी श्वास की तरह हो गई है। सुबह उठते ही हम टाइम या नोटिफिकेशन देखते हैं। रात को सोने से पहले आखिरी नजरें स्मार्टफोन पर ही पड़ती हैं। यह अनवरत संपर्क मानसिक, जैविक तथा सामाजिक ताल–मेल को तोड़ रहा है। इस डिजिटल अधिभार से सोचने की क्षमता थकती है, मन भावात्मक रूप से मूर्छित होता है, नींद की गुणवत्ता घटती है और शरीर का आसन बिगड़ता है, आँखें थककर कमजोर पड़ती हैं, त्वचा समय से पहले बूढ़ी दिखने लगती है। तस्वीर बिलकुल साफ है कि यह केवल गैजेट उपयोग नहीं, यह मानवीय मूल्यों और मानस पर पड़ता दबाव है।

स्क्रीन टाइम और त्वचा – ब्लू लाइट की दुविधा : ज्यादातर लोग बढ़ती उम्र के लिए यू वी रेज को जिम्मेदार मानते हैं, लेकिन स्क्रीन से निकलने वाली ब्लू लाइट भी अब एक "साइलेंट किलर" मानी जा रही है। इसके परिणामस्वरूप कोलेजन में कमी, पिगमेंटेसन फाइन लाइन्स, डलनेस होने लगती है। त्वचा विज्ञान संबंधी शोध बताते हैं कि ब्लू लाइट यू वी से ज्यादा गहराई तक त्वचा में प्रवेश करती है, जिससे ऑक्सी डेटिव स्ट्रेस, इन्फलेमेसन और कोलेजन ब्रेकडाउन होता है। इससे चेहरे पर झुर्रियाँ, धब्बे और समय से पहले बुढ़ापा आने लगता है खासकर उनके बीच जो हर दिन घंटों स्क्रीन के सामने बैठे रहते हैं। विडम्बना यह है कि एंटी–एजिंग क्रीम्स तो लोग भरपूर खरीद रहे हैं, लेकिन असली कारण उनकी हथेलियों में ही है।

2. मानसिक थकान और संज्ञानात्मक अधिभार

लगातार कनेक्टिविटी का मतलब है–लगातार ध्यान का दबाव। सोशल मीडिया, ईमेल, 24×7 न्यूज... दिमाग को आराम मिलना मुश्किल हो गया है। इससे निर्णय लेने में कठिनाई, किसी कार्य में ध्यान लगाने में कमी और मानसिक थकावट बढ़ती है। ताजा न्यूरोलॉजिकल अध्ययनों से पता चलता है कि गैजेट्स का अधिक उपयोग प्री–फ्रंटल कॉर्टेक्स यानी दिमाग के कंट्रोल सेंटर पर असर डालता है। इसके परिणामस्वरूप भूलने की आदत, विचलित होने की प्रवृत्ति, मानसिक सहनशीलता में कमी है। कुछ शोध तो इसका संबंध समय से पहले cognitive ageing से भी जोड़ रहे हैं।

3. डिजिटल बर्नआउट और मानसिक स्वास्थ्य का क्षरण

फोमो, साइबरबुलेयिंग, सोशल कंप्रेशन और इन्फोरमेशन ओवरलोड, ये सब डिजिटल युग की देन हैं और यही चिंता, अवसाद व क्रोनिक स्ट्रेस को बढ़ा रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट्स युवाओं और प्रोफेशनल समूहों में डिजिटल बर्नआउट को एक बढ़ते खतरे के रूप में चिन्हित करती हैं। लगातार डिजिटल एंगेजमेंट दिमाग की डोपामीन पाथवेस को बदल देती है, और एडक्टिव बिहेवियर पैदा होता है, जिससे भावनात्मक अस्थिरता और बढ़ती है और विडम्बना यह है कि दुनिया पहले से कहीं ज्यादा कनेक्टेड है फिर भी अकेलापन महामारी के स्तर तक पहुँच चुका है।

सूचनाओं की बाढ़ ने दिमाग को "अनवरत सतर्कता" की स्थिति में पहुँचा दिया है। न परिणामों पर सोच पाते, न चित्त केंद्रित रह पाता है। हम निर्णय लेने में थक जाते हैं, इसे आधुनिक मनोविज्ञान "डिसीजन फटीग" कहता है। हमारा दिमाग अब रिएक्शन आधारित हो गया है, रिफलेक्शन आधारित नहीं।

4. पोस्चर समस्याएँ और टेक्सट नेक पीढ़ी

फोन या लैपटॉप पर झुककर बैठने की आदत केवल गलत पोस्चर नहीं–बल्कि क्रोनिक मस्कयूलोस्केल्टन समस्याओं का कारण बनती है। आज आर्थोपेडिक क्लीनिक्स में टेक नेक, बेक पेन और डिजिटल आई स्ट्रेन के मामलों में वृद्धि दिख रही है, वो भी किशोरों में। लंबे स्क्रीन एक्सपोजर से आँखों में ड्राईनेस, बल्र्ड विजन, सिरदर्द सब बढ़ रहे हैं। इसे कम्प्यूटर विजन सिंड्रोम कहा जाता है। समय के साथ–साथ, ये शरीर को धीरे–धीरे थका, कठोर और "व्यवहारिक रूप से बूढ़ा" बना देती हैं। धड़ झुकाना, गर्दन आगे झुकाना, स्क्रीन पर आंख गड़ाए रहना, यह पोस्चर हमारी रीढ़ की ऊपरी संरचना को डिजनरेटिव बना रहा है। डॉक्टरों की भाषा में ''टेक्सट नेक फिनोमिनेन''। अपनी रीढ़ की फलेक्सिीबिलिटी को हम नोटिफिकेशन की कीमत पर खो रहे हैं।

5. अति–कनेक्टिविटी वाला समाज और बढ़ती सामाजिक दूरी

शायद डिजिटल एजिंग का सबसे क्रूर पक्ष यही है कि कनेक्शन के नाम पर ये असल में डिस्कनेक्ट कर रहा है। स्क्रॉलिंग ने बातचीत को बदल दिया है। नोटिफिकेशन ने मानव एंगेजमेंट की जगह ले ली है। परिवार साथ बैठकर खाना खाते हैं लेकिन आँखें स्क्रीन में होती हैं। बच्चों का पालन–पोषण लोग स्क्रीन के हवाले कर रहे हैं, मानवीय संलग्नता कम हो रही है। इससे सहानुभूति कम हो रही है, बच्चों की भावनात्मक समझ कमजोर हो रही है और समाज "हमेशा ऑन" लेकिन "मानसिक रूप से अनुपस्थित" बनता जा रहा है।

संबंधों का खोखलापन- डिजिटल टूगेदरनेस, इमोशनल आइसोलेशन

परिवार साथ बैठा है पर बात कोई नहीं कर रहा, स्क्रीन सबका संवाद बन चुकी है। बच्चे साथ हैं पर माता–पिता स्क्रीन के कारण मनोवैज्ञानिक रूप से अनुपस्थित हैं। भावनाएं इमोजी में सीमित हो गई हैं, सहानुभूति क्लिक बेस्ड हो गई है। हम बात तो ज्यादा करते हैं, पर कनेक्शन होता है।

क्या डिजिटल एजिंग को धीमा किया जा सकता है? समाधान

बिल्कुल। अनप्लग होकर जीवन से पुनः जुड़ना होगा। डिजिटल एजिंग को रोका जा सकता है पर इसके लिए दृढ इच्छा शक्ति और अनुशासन चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- दिन में कम से कम 1 घंटा स्क्रीन–फ्री समय
- वीकली डिजिटल डिटॉक्स
- ब्ल्यू लाइट फील्टर्स और नाइट मोड
- पोस्चर कनेक्शन
- मानव संपर्क की संचेतना
- होबीज रखना (कला, संगीत, पढ़ना, घूमना, गार्डेनिंग इत्यादि)

हमारा तंत्रिका तंत्र केवल डिजिटल उत्तेजना पर विकसित नहीं हुआ। वह रियल वर्ड संवेदी इनपुट से पोषित होता है जैसे कि हवा, धूप, ध्वनि, रंग, मानव ऊर्जा। लेकिन इसके लिए सचेत प्रयास जरूरी हैं।

1. डिजिटल डिटॉक्स–नियमित "स्क्रीन फ्री घंटे/दिन" रखें। प्रकृति के साथ समय बिताने की कोशिश।
2. ब्ल्यू लाइट प्रोटेक्शन–नाइट मोड, ब्लू–लाइट फिल्टर, एंटी रेडिएशन चश्में का इस्तेमाल करें।
3. माइंडफुल यूजेज– गैर–जरूरी नोटिफिकेशन बंद करें।
4. पोस्चर करेक्शन– स्ट्रेचिंग और एग्रोनोमिक सीटिंग का अभ्यास करें।
5. रियल वर्ड इंटरेक्शन–वास्तविक बातचीत और आमने–सामने की बातचीत बढ़ाएँ।

निष्कर्ष : प्रगति की कीमत?

प्रगति अच्छी है, पर विवेक के बिना प्रगति विनाशकारी भी बन सकती है। तकनीक के लाभों पर कोई विवाद नहीं है। इसने ज्ञान को लोकतांत्रिक किया है, कनेक्टिविटी को सुधारा है, और उद्योगों को नया आकार दिया है। पर अब सवाल है–किस कीमत पर?

"रिश्ते आज ऑनलाइन हैं, मुलाकातें सिर्फ स्टेटस में,
दिल भी टाइपिंग में है, और भावनाएँ बस ड्राफ्ट में।"

डिजिटल एजिंग कोई बजवर्ड नहीं, ये चेतावनी है। डिजिटल एजिंग हमें चेतावनी देती है कि सुविधा और आराम के नशे में हम जीवन की मूल गरिमा, आत्मबोध, स्वास्थ्य, सोचने की शक्ति और रिश्तों को न खो दें। हमें डिजिटल सुविधाओं का आनंद लेते हुए उसके जोखिमों को भी स्वीकारना होगा। डिजिटल व्यवहार पर नियंत्रण पुनः स्थापित करके हम न केवल अपनी युवावस्था बल्कि अपनी भलाई, रिश्ते और मनुष्यता को भी सुरक्षित रख सकते हैं। सुविधा की कीमत हमारे जीवन की सार्थकता न बन जाए–यही समय है, थोड़ा अनपलग होने का, ताकि हम सचमुच रिचार्ज हो सकें।

****

बादलों के पार, देवताओं के बीच रुद्रनाथ की अलौकिक यात्रा

यात्रा वृतांत

अविनाश कुमार
सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क)
वीपीएचईपी, पीपलकोटी

सितंबर का महीना था, जब हम चार साथी – ऑफिस के सहकर्मी और दोस्त – उत्तराखंड के सबसे कठिन ट्रेक्स में से एक पर निकल पड़े। हमारा गंतव्य था रुद्रनाथ मंदिर, जो समुद्र तल से लगभग 3,600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। 22.24 किलोमीटर का यह ट्रेक न केवल हमारी शारीरिक क्षमता बल्कि हमारी आस्था और दृढ़ता की परीक्षा भी था।

हमने अपनी यात्रा की शुरुआत सागर गांव से की। शुरुआती रास्ता बेहद खूबसूरत था–हरियाली से घिरा और पक्षियों की चहचहाहट से गूंजता। लेकिन यह सौम्य रास्ता जल्द ही अपनी असली चुनौती दिखाने लगा। जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते गए, पगडंडियां मुश्किल होती गईं। दोपहर तक मौसम ने करवट ली। तेज बारिश और आंधी–तूफान ने हमारे रास्ते को और कठिन बना दिया। पैर कीचड़ में धंसने लगे, लेकिन हर कदम के साथ हिमालय की खूबसूरती हमें आगे बढ़ने का साहस दे रही थी।

पित्रधार: जहां बादल हमारे नीचे थे

पूरा दिन चलते–चलते, सूरज ढलने के साथ हम पित्रधार पहुंचे। यह रुद्रनाथ ट्रेक का सबसे ऊंचा स्थान है। यहां पहुंचने तक शरीर पूरी तरह थक चुका था। पैरों ने जैसे चलने से इनकार कर दिया था, सांसें तेज हो रही थी, और ऑक्सीजन की कमी महसूस होने लगी थी। लेकिन जब हमने चारों ओर देखा, तो आंखों के सामने का नजारा अविश्वसनीय था। बादल हमारे पैरों के नीचे थे, और हम आसमान को छू रहे थे। यह एक ऐसा अहसास था जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। प्रकृति की गोद में उस पल ने सारी थकान भुला दी। अँधेरा हो चुका था और मंदिर से अभी हम 5–7 किलोमीटर दूर थे। लगातार बारिश हो रही थी, घनघोर अँधेरा था, न ट्रेक पर लाइट की व्यवस्था थी, न आगे ठहरने की जगह और न ही मोबाइल में सिग्नल। बारीश के कारण कच्चे ट्रेक पर कीचड़ हो गया था, जिसके कारण फिसलने का डर था जो कि जानलेवा हो सकता और जानवरों का भय भी था। हम चार के साथ पित्रधरा में 4–5 अन्य यात्री भी थे। हमने तय किया अब आगे का रास्ता हम लोग साथ तय करेंगे। हम सबने मोबाइल के फ्लेश लाइट के साथ एक दूसरे को सहयोग करते हुए हम आगे बढ़े। अन्ततः हम रात को 9 बजे के आस–पास मंदिर के समीप पहुंचे। जैसे ही हमें मंदिर की झलक दूर से दिखी, मानों थक के चूर–चूर हो चुके शरीर में जान आ गयी हो। हम सब एक स्वर में खुशी से चिल्ला उठे, "हर हर महादेव"।

रुद्रनाथ का दिव्य दर्शन

मंदिर तक पहुंचने के बाद, हर संघर्ष जैसे सार्थक लगने लगा। छोटे लेकिन बेहद सुंदर इस मंदिर की शांति और भव्यता शब्दों से परे थी। चारो ओर फैले घास के मैदान, बर्फ से ढकी चोटियां और बुग्यालों की हरी–हरी घासों के बीच रंग बिरंगे दुर्लभ प्रजाति के फूल – ऐसा लग रहा था जैसे स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

अगली सुबह हम रुद्रनाथ मंदिर की मंगला आरती में शामिल हुए। यह एक ऐसा अनुभव था जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। आरती की गूंज, धूप और चंदन की खुशबू, और सूरज की पहली किरणों का मंदिर पर पड़ना – ऐसा लगा जैसे प्रकृति भी भगवान शिव की आराधना कर रही हो।

यात्रा का अंत, एक नई शुरुआत

वापसी का सफर भी आसान नहीं था, लेकिन मंदिर के दर्शन और यात्रा के अनुभवों ने हमारे कदमों को हल्का कर दिया। हर मोड़ पर हम अपनी यात्रा की बातें करते, मुस्कुराते, हिमालय की विशालता को निहारते और हर खुबसूरत पल को अपने मोबाइल के कैमरे में उतारते हुए हम वापस आ गए।

रुद्रनाथ की यात्रा केवल एक ट्रेक नहीं है, यह एक आध्यात्मिक अनुभव है, जो शरीर, मन और आत्मा को नया जीवन देता है। अगर आप प्रकृति के करीब जाना चाहते हैं, अपने अंदर छुपी ताकत को परखना चाहते हैं, तो रुद्रनाथ आपका इंतजार कर रहा है–बादलों के पार, देवताओं के बीच।

****

सोशल मीडिया

लेख

मनबीर सिंह राणा
डाटा एंट्री ऑपरेटर
केंद्रीय संचार

सोशल मीडिया आज के डिजिटल युग का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है। यह इंटरनेट आधारित ऐसा मंच है जहां लोग अपने विचार, तस्वीरें, वीडियो और अन्य सामग्री साझा कर सकते हैं तथा दूसरों के साथ संवाद स्थापित कर सकते हैं। सोशल मीडिया ने संचार के पारंपरिक स्वरूप को बदलकर मानव जीवन के हर पहलू में गहरा प्रभाव डाला है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक पक्षों में यह शामिल है कि यह हमें दुनिया में कहीं भी किसी से भी तुरंत जुड़ने की सुविधा देता है। इसके जरिए सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलनों को व्यापक जनसमूह तक पहुंचाने में मदद मिलती है। उद्यमी, कलाकार और कंटेंट क्रिएटर इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी पहचान बना सकते हैं और वित्तीय स्वतंत्रता तक पहुंच सकते हैं। इसके साथ ही, विभिन्न विषयों पर ज्ञान बढ़ाने, नई स्किल सीखने और अपडेट रहने में भी इसका बड़ा योगदान है।

हालांकि, सोशल मीडिया के कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। यह फर्जी खबरों और गलत सूचनाओं के प्रसार का एक प्रमुख स्रोत बन गया है, जिससे समाज में भ्रम और तनाव उत्पन्न होता है। कई बार लोग अपनी ऑनलाइन उपस्थिति की वजह से आत्म–मूल्य की तुलना में कमी महसूस करते हैं, जिससे मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। सोशल मीडिया पर समय अधिक बिताने से ध्यान में कमी, अकेलेपन और आईक्यू पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है।

भारत में सोशल मीडिया ने सामाजिक जागरूकता और सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उदाहरण स्वरूप #MeToo और #Dalit Women Fight जैसे आंदोलन। वहीं, सरकार और संस्थाएं डिजिटल साक्षरता, साइबर सुरक्षा और डाटा गोपनीयता पर जागरूकता बढ़ाने के लिए कई पहल कर रही हैं।

अतः सोशल मीडिया एक शक्तिशाली उपकरण है, जिसका प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकता है। इसका उपयोग संतुलित और सावधानी पूर्वक करके ही हम इससे जुड़ी चुनौतियों से बच सकते हैं और इसके लाभ उठा सकते हैं। सोशल मीडिया हमें जोड़ने के साथ–साथ हमारे आत्म–मूल्य और मानसिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना जरूरी है। संतुलन और जागरूकता के बिना सोशल मीडिया हमारे लिए हानिकारक भी बन सकता है।

यह लेख सोशल मीडिया की भूमिका, लाभ, हानियां और सामाजिक प्रभावों पर आधारित है, जो इस डिजिटल युग की अनिवार्य जरूरत और चुनौती दोनों को दर्शाता है।

****

स्मृति शेष

संस्मरण

सरला डबराल
उप प्रबंधक (पैरा मेडिकल)
निरामय स्वास्थ्य केंद्र, ऋषिकेश

दिसंबर का अंतिम सप्ताह चल रहा था, मौसम में ठंडक का एहसास बढ़ना शुरू हो गया था। मैं अपनी ड्यूटी समाप्त कर दुपहिया वाहन से अपने मायके जा रही थी। पहाड़ी रास्ता और ठंडे मौसम में जितनी तेज मैं वाहन चला सकती थी उतना चला रही थी। अस्तांचलगामी सूर्य भी तेजी से अपने मंजिल की तरफ बढ़ रहे थे, मानो ठंड के मौसम में जल्दी से जल्दी अपने गंतव्य तक पहुँच जाना चाहते हों। मुझे भी चिंता थी कि सूर्यास्त से पहले घर पहुँच जाऊँ। लग रहा था होड़ लगी हो कि कौन पहले अपने घर पहुँचेगा। पहाड़ी क्षेत्र में स्थानांतरण के साथ कई दुश्वारियां थी किन्तु एक सुकून था कि माँ का घर पास है, और ये सुकून सारी दुश्वारियों पर भारी पड़ जाता था। मैं गाहे–ब–गाहे चली जाया करती थी माँ से मिलने, वरना पहले तो महीनों तक माँ से मुलाकात नहीं हो पाती थी। माँ के वृद्धावस्था में उनका सानिध्य मिल रहा था, इस बात की मुझे खुशी थी। स्त्रियों को वैसे भी माँ का साथ कम ही समय के लिए मिलता है, पुरूष इस मामले में भाग्यशाली होते हैं, माँ का साथ तो उनको मिलता ही है, कभी बेटी कभी बहन तो कभी पत्नी भी उन्हें ममत्व का एहसास कराती रहती है। हम स्त्रियों को इतनी ही तसल्ली रहती है कि माँ मायके में स्वस्थ और सकुशल है।

माँ का स्वास्थ्य खराब था, अभी पिछले दिनों दो तीन बार मिलकर आई थी माँ से काफी कमजोर हो गई थी और खाना पीना भी बहुत कम हो गया था, अधिकतर बिस्तर पर ही लेटी रहती थी, जब भी मैं लौटकर आ रही होती, माँ आँगन तक किसी तरह साथ आती, रूंधे गले और नम आँखों से लरजती आवाज में कहती, छुट्टी मिलली त फिर अई ह्वा (छुट्टी मिलेगी तो फिर आना हैं) वृद्धावस्था अपने आप में ही एक बीमारी है। घर से फोन आया था कि माँ बिस्तर से गिर गई थी और हाथ में चोट लगी है, बहुत दर्द हो रहा है। अपने यहाँ के ऑर्थोपेडिक चिकित्सक से परामर्श करके मैंने कुछ दर्द निवारक दवाइयां, इंजेक्शन्स, मलहम वगैरा भी साथ में ले लिया था, साथ ही सुबह डॉक्टर को दिखाने ले जाने कि लिए एम्बुलेंस की व्यवस्था भी कर दी थी। घर पहुँच कर देखा, माँ बिस्तर पर लेटी थी और दर्द से कराह रही थी। मैंने सबसे पहले उन्हें दर्द का इंजेक्शन लगाया और चोट पर मलहम लगाकर पट्टी बाँधी। काफी समय बाद दर्द में आराम आया होगा तो माँ का कराहना बंद हो गया और वह सो गई।

रात का खाना बन गया था, हमने पहले माँ को कुछ खिलाने की सोची और उन्हें आवाज देकर जगाया, काफी देर बाद उन्होंने धीरे से आँखें खोली, हमने कहा कुछ खा लो तो उन्होंने हाँ में हल्का सा इशारा किया। हमने उनको तकियों का सहारा देकर सीधा बिठाया और कटोरी में दलिया लिया, दलिया खिलाने के लिए चम्मच निकाला ही था कि माँ ने एक हिचकी सी ली और उनकी आँखें बंद हो गईं। आवाजें दी कोई प्रतिक्रिया नहीं, हिलाया डुलाया शरीर में कोई हलचल नहीं, टटोलकर देखा दिल की धड़कनें बंद हो चुकी थी, वह शांत हो चुकी थी इहलोक में उनकी यात्रा समाप्त हो चुकी थी। एकाएक मुझे यकीन नहीं हुआ कि माँ नहीं रही किंतु सच्चाई यही थी, दुनिया का सबसे निस्वार्थ प्रेम और ममता का साया मेरे सिर से उठ चुका था। रात भर रोते बिलखते रहे। सुबह माँ को ले गए अंतिम यात्रा में, मुझे एहसास हो रहा था कि मैं अपनी जड़ों से उखड़ चुकी हूँ, हम सब मौन थे, मानो हर एक की हर एक श्वास उनकी आत्मिक शांति की प्रार्थना कर रही हो, माँ केवल हमारी जननी मात्र नहीं थी वरन पूरे घर की आत्मा थी, उनके शब्द, उनकी हर सीख, हर आशीर्वाद मेरे भीतर उमड़ घुमड़ रहे थे। एक मिनट के लिए भी वहाँ ठहरने की इच्छा नहीं हो रही थी। एकाएक मायका बेगाना सा लगने लगा था। पहले जब कोई कहता था कि मायका माँ तक ही होता है तो मैं सोचती थी, लोग ऐसा क्यों कहते होंगे किंतु आज मुझे एहसास हो रहा था कि लोग सच कहते हैं, माँ के बाद भी मायके में माँ के अलावा सब कुछ होता है किन्तु वह आकर्षण समाप्त हो जाता है कि कहीं और को जाते हुए कदम मायके की तरफ मुड़ जाएं कि चलो माँ से मिलते हुए चलें। माँ हर सुबह की पहली किरण में तुम्हारा मुस्कुराता चेहरा देखूँ, तुम जहां भी रहना हमारे पथ को प्रकाशित करती रहना.....

****

सतर्कता: व्यक्तिगत जिम्मेदारी से सामाजिक संस्कार तक

लेख

सिमरन शाहीन
सहायक प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
अमेलिया कोल माइन परियोजना, सिंगरौली

घर-घर जागरूकता की ज्योति जलाएँ, सतर्कता को जीवन का मंत्र बनाएँ।
सतर्कता को सामाजिक संस्कृति बनाकर, महान राष्ट्र को और मजबूत बनायें।

आज का समाज विज्ञान, तकनीक और शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को छू रहा है। परंतु इसके साथ ही भ्रष्टाचार, साइबर अपराध, फेक न्यूज, आर्थिक धोखाधड़ी और सामाजिक असमानताओं जैसी नई चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं। ऐसे समय में सतर्कता केवल व्यक्तिगत आवश्यकता नहीं रह गई है, बल्कि यह समाज के लिए एक अनिवार्य संस्कार बन चुकी है।

व्यक्तिगत जिम्मेदारी के रूप में सतर्कता-

एक सतर्क व्यक्ति वह है जो अपने आसपास के वातावरण को समझदारी से परखता है, समस्याओं को पहचानता है और सही निर्णय लेने की क्षमता रखता है। व्यक्तिगत सतर्कता हमें न केवल धोखे, अपराध या गलत सूचना से बचाती है, यह दैनिक जीवन की एक बुनियादी जिम्मेदारी है, जो व्यक्ति को सजग, सुरक्षित और सक्षम बनाती है।

सामाजिक संस्कार के रूप में सतर्कता-

जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी सतर्कता को व्यवहार में उतारता है, तो यह सामूहिक रूप से समाज की संस्कृति का रूप ले लेती है। सतर्क समाज भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ मजबूत खड़ा होता है। इससे समाज में विश्वास, सहयोग और नैतिकता का विकास होता है।

सतर्कता को सामाजिक जिम्मेदारी बनाना क्यों आवश्यक है?

1. परिवार और समाज की सुरक्षा का आधार

जागरूक परिवार न केवल अपने सदस्यों की रक्षा करते हैं, बल्कि पूरे समाज को सुरक्षित वातावरण प्रदान करते हैं। सतर्कता के कारण अपराधों और अनुचित गतिविधियों की पहचान आसानी से हो जाती है और समय पर रोकथाम संभव होती है।

2. बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास

परिवार ही बच्चों की पहली पाठशाला है। यहाँ वे ईमानदारी, सम्मान, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसे मूल्य सीखते हैं। सतर्क और जागरूक परिवार बच्चों को बेहतर नागरिक बनाते हैं, जिससे भावी समाज अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार बनता है।

3. डिजिटल युग में सुरक्षा की अनिवार्यता

आज साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे हैं। फर्जी कॉल, ऑनलाइन धोखाधड़ी, हैकिंग और झूठी खबरों से बचने के लिए डिजिटल साक्षरता अत्यंत आवश्यक है। सतर्कता परिवार को आर्थिक, मानसिक और सामाजिक नुकसान से बचाती है।

4. सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध सशक्त साधन–

सतर्क परिवार दहेज, बाल विवाह, नशा, घरेलू हिंसा और भ्रष्टाचार जैसी बुराइयों का विरोध करने में सक्षम होते हैं। जब हर घर जागरूक होता है तो समाज स्वयं ही अधिक सशक्त और नैतिक बन जाता है।

सतर्कता को समाज की जिम्मेदारी बनाने के लिए आवश्यक कदम-

1. परिवार में खुला संवाद

बच्चों और युवाओं के साथ सुरक्षा, तकनीक, सामाजिक मुद्दों और नैतिक मूल्यों पर खुलकर बातचीत करना आवश्यक है। इससे उनका विवेक और निर्णय–क्षमता मजबूत होती है।

2. कानून और नागरिक अधिकारों का ज्ञान

कानून, अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी व्यक्ति को आत्मविश्वासी बनाती है। यह उसे अन्याय और गलत गतिविधियों का विरोध करने की शक्ति देती है।

3. डिजिटल साक्षरता–समय की माँग

डिजिटल सुरक्षा के ज्ञान के बिना आज का जीवन अधूरा है। फेक न्यूज, साइबर फ्रॉड और डेटा चोरी से बचने के लिए डिजिटल साक्षरता अनिवार्य हो चुकी है। यह पूरे परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

4. सामुदायिक सहयोग और जागरूकता कार्यक्रम

स्थानीय बैठकों, मोहल्ला समितियों और जागरूकता अभियानों में भाग लेने से सामूहिक चेतना विकसित होती है। इससे सतर्कता समाज की साँझा संस्कृति बन जाती है।

5. गलत के खिलाफ आवाज उठाने का साहस

चुप्पी अपराध को बढ़ावा देती है। भ्रष्टाचार, अन्याय और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना सतर्कता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। यही साहस समाज को सही दिशा देता है।

समाज की प्रगति उसके नागरिकों की जागरूकता पर निर्भर करती है। सतर्कता केवल एक दिवस की गतिविधि नहीं, बल्कि एक ऐसी सोच, संस्कृति और जीवनशैली है जो व्यक्ति से लेकर पूरे समाज को प्रभावित करती है। जब यह संस्कृति घर–घर में विकसित होती है, तो व्यापक सामाजिक परिवर्तन स्वतः ही संभव हो जाता है। आज के समय में, जहाँ हर कदम पर नई चुनौतियाँ सामने आती हैं, सतर्कता को अपनाना और भी अधिक आवश्यक हो गया है। हमें न केवल स्वयं सजग रहना है, बल्कि अपने परिवार, बच्चों, पड़ोसियों और पूरे समाज में जागरूकता का सतत प्रसार भी करना है। सतर्कता केवल व्यक्तिगत सुरक्षा या जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए एक महत्वपूर्ण संस्कार है जो कि राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम है।

अंततः

"सतर्कता एक मजबूत, जिम्मेदार और प्रगतिशील समाज के निर्माण की दिशा में हमारा मार्गदर्शन करती है।"

****

विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

महत्वपूर्ण सुझाव/चर्चा एवं लिए गए निर्णय

विद्युत मंत्रालय की पुनर्गठित हिंदी सलाहकार समिति की प्रथम बैठक माननीय विद्युत एवं आवासन और शहरी कार्य मंत्री, श्री मनोहर लाल जी की अध्यक्षता में दिनांक 19 जून, 2025 को होटल अशोक, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में आयोजित की गई। सचिव (विद्युत), श्री पंकज अग्रवाल ने समिति के सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए समिति के गठन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर माननीय विद्युत तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री, श्री श्रीपद येसो नाइक ने अपने संबोधन में कहा कि विद्युत मंत्रालय ने न केवल विद्युत संबंधी परियोजनाओं की गति को बनाए रखा है बल्कि हिंदी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय वृद्धि की है। उन्होंने टीएचडीसी को पिछले वर्ष 14 सितबंर को माननीय गृह मंत्री जी के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई दी तथा अन्य उपक्रमों से भी इसका अनुसरण करने का आग्रह किया।

सलाहकार समिति के अध्यक्ष माननीय विद्युत मंत्री, श्री मनोहर लाल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष भारत सरकार के कार्यालयों में सर्वप्रथम विद्युत मंत्रालय हिंदी सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन कर रहा है। राजभाषा को आगे बढ़ाना हमारा राष्ट्रीय दायित्व है। उन्होंने कहा कि हिंदी का स्वभाव समावेशी रहा है जिसने सभी अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात किया है। उन्होंने अनेक उदाहरण देकर इस बात को समझाया कि हिंदी भाषा इतनी समृद्ध रही है कि बहुत से शब्द अंग्रेजी में भी हिंदी से ही अंगीकार किए गए हैं। माननीय मंत्री जी ने सदस्यों से कहा कि हिंदी को लेकर हमें एक न्यूनतम लक्ष्य तय करके चलना चाहिए कि अगले वर्ष तक हम अपने मंत्रालय एवं उपक्रमों में कम से कम इतना कार्य तो हिंदी में अवश्य करेंगे, यदि हम ऐसा करने में सफल रहते हैं तो निश्चित रूप से हम अपने कार्यालय में हिंदी के कामकाज को आगे बढ़ा पाएंगे।

तत्पश्चात सदस्य सचिव द्वारा, अध्यक्ष महोदय की अनुमति से, बैठक में मद वार कार्यसूची प्रस्तुत की। जिसमें विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की दिनांक 17 अगस्त, 2023 को आयोजित बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि, बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई शामिल थी। इस अवसर पर विद्युत मंत्रालय के द्वारा बनाई गई अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित लघु फिल्म भी दिखाई गई।

विद्युत मंत्रालय में राजभाषा कार्यान्वयन को गति देने के संबंध में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों के सुझाव:

1. माननीय सांसद श्री सुरेश कुमार कश्यप ने कहा कि हमें अंग्रेजी भाषा को सम्मान का प्रतीक न समझकर अपनी मातृभाषा को ही बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए तथा कार्यशालाओं आदि के माध्यम से हिंदी को कार्यालयों में बढ़ाया जाना चाहिए।
2. माननीय सांसद श्री अनूप संजय धोत्रे ने सुझाव दिया कि कार्यालयों में आने वाले इंटर्न को कुछ समय के लिए हिंदी भाषा का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। सभी दस्तावेज अगर कागज रहित किए जाते हैं तो अगर उन्हें ऑडियो के माध्यम में भी हिंदी भाषा में उपलब्ध कराया जाए तो और अधिक लाभप्रद होगा क्योंकि जितना ज्यादा हम सुनेंगे, उतनी ही जल्दी हम उसे सीखेंगे भी।

3. माननीय सांसद श्री अमर पाल मौर्य ने सुझाव दिया कि हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न संगठनों के लोगों को एकजुट किया जाना चाहिए जिससे प्रत्येक राज्य और जिले में इस कार्य के लिए हमारे पास एक बड़ी संख्या बल बन सके। साथ ही सभी जिलों के पुस्तकालयों से जुड़कर हमें एक बृहद श्रृंखला बनानी होगी ताकि हिंदी कार्य में जुड़ी किसी भी संस्था की कठिनाई को एक साथ मिलकर दूर किया जा सके। इसी प्रकार हम आगे चलकर विद्यालयों और विश्वविद्यालयों आदि में भी इस प्रकार की श्रृंखला पर विचार कर सकते हैं।

4. नागरी प्रचारिणी सभा से उपस्थित श्री व्योमेश शुक्ल ने निम्न सुझाव दिए:
   क. विद्युत मंत्रालय के विभिन्न संगठनों में हिंदी के उपन्यासों और साहित्यिक कृतियों को भी, एकाग्र नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से, देश के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
   ख. पुस्तकालयों के लिए हिंदी पुस्तकों के क्रय हेतु एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाना चाहिए।
   ग. विद्युत मंत्रालय के सहयोग से एक विद्युत शब्दावली का प्रकाशन।
   घ. बोलने की कार्यशालाएं भी आयोजित की जानी चाहिए। हम सभी को सभ्य और सुसंस्कृत भाषा बोलने की आदत डालनी चाहिए।

5. केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के प्रतिनिधि श्री गोपाल कृष्ण फरलिया ने निम्न सुझाव दिए:
   क. बैठक में लिए गए निर्णयों को कार्यालयों की पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाए।
   ख. मंत्रालय में आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं में सलाहकार समिति के सदस्यों को आमंत्रित किया जाना चाहिए।
   ग. पत्रिकाओं की प्रतियां सभी सदस्यों को भेजी जाएं।
   घ. हिंदी सलाहकार समितियों का आयोजन वर्ष में दो बार अवश्य किया जाना चाहिए।
   ड. हिंदी कार्य संबंधी प्रविष्टि, अधिकारी की सेवा पुस्तिका में भी की जानी चाहिए।
   च. भर्ती के लिए प्रक्रियाधीन पदों के समक्ष यह दर्शाया जाना चाहिए कि ये पद कब से प्रक्रियाधीन हैं और वर्तमान में किस स्थिति पर हैं।
   छ. वेबसाइट पहले हिंदी में खुलनी चाहिए।

6. श्री विरेन्द्र कुमार यादव ने निम्न सुझाव दिए:
   क. विद्युत मंत्रालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने हस्ताक्षर केवल हिंदी में करना सुनिश्चित करें।
   ख. वर्ष में हिंदी सलाहकार समिति की न्यूनतम दो बैठकों का आयोजन।
   ग. वेबसाइट का द्विभाषी होना और इसका पहले हिंदी में खुलना।
   घ. मंत्रालयों और विभागों में नियमित रूप से काव्य गोष्ठियां और कवि सम्मेलनों का आयोजन किया जाना।
   ङ. उपक्रमों के कुल तथा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित कार्यालयों की संख्या को दर्शाया जाना चाहिए।

7. विश्व हिंदी परिषद से उपस्थित हुए सदस्य डॉ. विपिन कुमार जी ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर मंत्रालय द्वारा किए गए अनुपालन की सराहना करते हुए सुझाव दिया कि हिंदी को रोजगार, ज्ञान–विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाए जाने में विद्युत मंत्रालय अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने हिंदी में हस्ताक्षर करने तथा वेबसाइट खुलने की प्रथम भाषा हिंदी होने का सुझाव दिया।

8. डॉ. यतीन्द्र कुमार कटारिया ने सुझाव दिया कि हिंदी संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों को भी आमंत्रित किया जाए। राजभाषा के पदों पर सीधी भर्ती होनी चाहिए तथा पत्रिकाओं में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्यों के लेखों को भी शामिल किया जाए।

9. श्री वासुदेव चक्रवर्ती जी का सुझाव था कि चूंकि दक्षिण भारतीय भाषाओं में संस्कृत के शब्दों की अधिकता है अतः संस्कृत शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए, साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से युवकों में हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जा सकता है।

10. श्रीमती प्रिया कुमारी ने कहा कि हिंदी भाषा के प्रयोग में बच्चों में देखी जा रही उदासीनता को दूर करने और उनका मनोबल बढ़ाने के प्रयास किए जाने चाहिए और हिंदी में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी बच्चों को पुरस्कार दिया जाना चाहिए।

11. अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्यों के सुझावों पर विस्तार पूर्वक चर्चा के उपरांत निम्नलिखित निर्णय लिए गए:
    (i) प्रत्येक अधिकारी अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही करने का अधिकतम प्रयास करे।
    (ii) विद्युत मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों में और घरों में भी नामपट्ट हिंदी में हो।
    (iii) कार्यालयों में साइन बोर्ड आदि भी हिंदी में बने होने चाहिए।
    (iv) हिंदी सम्मेलनों/कार्यशालाओं में अच्छे वक्ता आमंत्रित किए जाने चाहिए साथ ही अच्छी हिंदी लिखने की कार्यशालाएं भी होनी चाहिए ताकि व्याकरण का भी सही प्रयोग किया जा सके और भाषा में एकरूपता आ सके।
    (v) मंत्रालय व इसके अधीनस्थ उपक्रम अगले तीन माह के भीतर वेबसाइट हिंदी में पहले खुलना सुनिश्चित कर लें।
    (vi) विद्युत मंत्रालय के हिंदी के लेखों, पत्रिकाओं तथा पुस्तकों आदि में संस्कृत के शब्दों का यथासंभव प्रयोग भी किया जाए।
    (vii) विद्युत मंत्रालय द्वारा नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित कार्यालयों की अद्यतन समेकित सूची तैयार की जाए।

तत्पश्चात, अध्यक्ष महोदय द्वारा टीएचडीसी तथा सीपीआरआई को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा ज्योति शील्ड और एसजेवीएन तथा आरईसी को कार्यालय में राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए विशेष पुरस्कार क्रमशः राजभाषा दीप्ति व राजभाषा प्रभा से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थानों के द्वारा प्रकाशित की जा रही हिंदी की गृह पत्रिकाओं का विमोचन भी किया गया।

****

पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं च धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद्धनम्।।

– चाणक्य नीति

अर्थः जो विद्या (ज्ञान) केवल पुस्तकों में ही सीमित है, और जो धन (पैसा) दूसरों के पास है, वह विद्या और धन समय पर काम नहीं आते अर्थात जब आवश्यकता होती है, तो न तो वह विद्या काम आती है और न ही वह धन।

खुद से मुलाकात

कविता

विपुल विश्वकर्मा
सहायक प्रबंधक (एमपीएस)
ऋषिकेश

भीड़ में भी कभी–कभी,
मन अपना घर ढूँढता है,
शोर से बचने की चाह में
खामोशी का कोई रास्ता ढूँढता है।

अकेलेपन की नीली, खूबसूरत छाँव,
थोड़ी ठंडी, थोड़ी नरम, कुछ उदास एहसास ढूँढता है,
मन के कोनों में दबे अधूरे सपने,
धीरे–धीरे अपना मुकाम ढूँढता है।

कभी लगता है – मैं ही मैं हूँ,
लेकिन दुनिया में अपना अस्तित्व ढूँढता हूँ,
मुझसे जरा दूर खड़ी, जिन्दगी, लोग, बातें, हँसी,
जाने क्यों ये दिल तन्हा–सी बेचैनी ढूँढता हूँ।

एक कप चाय, खुली खिड़की,
और हवा का छोटा सा गीत ढूँढता है।
इन सबके अलावा, दयालु दिल, दुनिया की थोड़ी प्रीत।
अपने मन से विपरीत, लोग के चेहरे की खुशी ढूँढता हूँ।

शायद इसी तलाश में, मन हर दिन
खुद से थोड़ा और इंसान बनना सीखता है।
थक कर जब सारी तलाशें खो जाती हैं,
तब मन फिर, खुद से मुलाकात ढूँढता है।

****

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः !
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति !!

– भर्तृहरि रचित नीतिशतकम्

अर्थः मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य है। मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र परिश्रम है। परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं रहता।

मेरे गांव की सड़क

कविता

अभिषेक तिवारी
जनसंपर्क अधिकारी, केंद्रीय संचार,
ऋषिकेश

एक सीधी सरपट सड़क,
खेतों के बीचों–बीच,
रास्ता बनाते हुए जाती है,
मेरे गांव की ओर।
पीपल के पेड़ों से,
खेतों की मेड़ों से,
नहर के बांध से,
बगीचों के आम से,
पूछती है,
कब आएंगे वो पथिक,
जो अब तक लौटे नहीं।
वह सीधी सरपट सड़क,
तकती है राह,
हर उस शख्स की,
जिसने डाली थी माटी,
चलाए थे कुदाल,
भरा था उन गड्ढ़ों को,
जिसमें डगमाती थी साइकिल।
उन नवनिहालों की,
जो खिलखिलाते हुए जाते थे,
चिलचिलाती धूप में, वर्षा में,
कोहरे में लिपटी उन सर्द सुबह में,
जब शाम के बाद होती थी सीधे दोपहर।
वह सीधी सरपट सड़क,
तकती है राह,
उन मासूम पदचापों की,
जो व्याकुलता लिए,
पड़े थे ऐसे–जैसे पड़ती है ओस,
और करती है सुबह का इंतजार,
काश के फाहे जैसे फूलों पर,
सूरज की लालिमा में लुप्त हो जाने के लिए,
जैसे विलुप्त हो गए थे पदचाप।
वह सीधी सरपट सड़क,
तकती है राह,
उन पगडंडियों की,
जिधर से आती थी,
जेठ की दोपहरी में,
शीतल बयार सी।
गमकाती हुई फिजाओं को,
और ओझल हो जाती थी,
वैसे ही जैसे ओझल हो गई,
इस सड़क से गुजरने वाली हर एक परछाई।
उम्मीदों से भरी हुई,
वह सीधी सरपट सड़क,
तकती है राह,
आज भी हर पल,
उनके लिए जिन्होंने खेली थी होली,
गाए थे फाग, जलाए थे दीये,
और पूछती है, सरसों के फूलों से
धानों की बालियों से,
गेहूं के डंठलों से,
कि कब आएंगे वो पथिक,
जो अब तक लौटे नहीं।

****

अपना देश अपना पहाड़

कविता

मनबीर सिंह राणा
डाटा एंट्री ऑपरेटर
केन्द्रीय संचार विभाग, ऋषिकेश

अपना देश, अपना पहाड़,
जहाँ दिल से जुड़ी हैं याद।

हर पत्थर की कहानी में,
बसी है हमारी जिन्दगी की बात।

ऊँचे–ऊँचे हिमालय के शिखर,
लेते हैं हमको आकाश से करीब।

शांत हवा में बहती है खुशबू,
प्रकृति की ये अनमोल निधि है।

पहाड़ों की गोद में बसे गाँव,
जहाँ हर मुस्कान है प्यार की वजह।

अपना देश, अपना पहाड़ हमारा गर्व,
जहाँ मिलता है मन को सच्चा प्यार।

राष्ट्र की शान, अपनी है पहचान,
पर्वतों की छाँव में मिलता है जीवन महान।

रखें इसे सदा अक्षुण्ण,
देश और पहाड़ों का है ये वादा महान।

****

अंतरराष्ट्रीय वाटर स्पोर्ट्स कप का भव्य आगाज

कविता

राजपाल आर्य
सुरक्षा विभाग, टिहरी

टिहरी की निर्मल जलधारा,
लहरों में आज उमंग है नई।
विश्व मंच पर गूँज उठा है,
भारत की शौर्य–धुन सुनी।

नीला अम्बर, झील दर्पण–सा,
खेलों का रंग बिखेर रहा।
दूर–दराज देशों के खिलाड़ी,
अपनी क्षमताएं फेर रहा।

स्पीड बोटों की गर्जन ध्वनि,
कायक–बोर्ड की गति सुहानी।
साहस, कौशल, जज्बे के संग,
लहरों से करती जंग पानी।

टीएचडीसी की इस झील में,
खुशियों का मेला छाया है।
वाटर स्पोर्ट्स कप के कारण,
टिहरी का मान बढ़ाया है।

विश्व पटल पर नाम रौशन,
ये उत्सव नई कहानी है।
प्रकृति, खेल और पर्यटन मिलकर,
भारत की पहचान पुरानी है।

जहाँ साहस मिलता जल से,
और हौसला बढ़ता हर साँस।
टिहरी की गोद में खिल उठा,
खेलों का भव्य जल–प्रकाश।

****

कठपुतली जीवन

कविता

सुश्री दवनीत कौर
सहायक प्रबंधक (मा.सं.–भर्ती)
ऋषिकेश

खामोश क्यों हो...
कुछ कहना चाहते हो...
या अब कुछ भी नहीं कहना चाहते...
अरे,
आज तो हताश से बैठे हो,
लगता है किसी नए गम की नुमाइश
का इरादा पक्का कर रखे हो।
सही–गलत, सरल–कठिन
इनके मायनों को नापने में लगे हो क्या हुजूर?
ये जिन्दगी है जनाब...
क्यों इन उलझनों में पैर फँसा रखे हो?
इम्तिहान का संघर्ष तो
उस दोपहरी ही शुरू हो चला था,
जब पहली दफा आँखों ने रंगीन नजारों की
इस दुनिया को घेरा था।
"खास" जैसा लफ्ज, एकतरफा क्यों नहीं है?
हर खास के मिल जाने पर भी,
ये बेचैनी बरकरार क्यों वही की वही है?
उदासी की वजह को कैसे स्वीकार करें?
खुद की तकदीर में न होने का अफसोस मानें,
या दूसरों से ईर्ष्या की निशानी घोषित कर दें?
ऐसी कौन–सी निराशा है तुम्हें, ऐ जिन्दगी से?
उसूलों से परे –
निवाले के लिए...?
हाथ फैलाना पड़ गया क्या बेरुखों के तले...?
कोसकर हर रहमत को अगर जिन्दगी का गुजारा होता,
मेरा यकीन मानो...
तुम्हारी बराबरी का इस जहाँ में कोई न तुमसे आगे होता।
चलो, आज अपनी पीठ थपथपा लो,
अंतरमन में लड़ी लड़ाइयाँ,
परिस्थितियों का खूबसूरती से सिमटना–
तुम्हारे लिए कुछ चंद क्षणों के संघर्ष पर विराम है...!!!
ये जो तुम मन के साफ हो,
निराश होकर बैठे जो मेरे पास हो,
गौर फरमाइएगा कहे गए लफ्जों पर...
कभी ठहर जाओ...
तो कभी नई मंजिल की ओर बढ़ पड़ो,
अनुभव ज्यादा है मुझे...
जिन्दगी का सफर बहुत हसीन है,
लोगों के कहे हुए ठहराव को
हमेशा के लिए न अपनाओ.....

****

पहली बारिश

कविता

प्रभात कुमार
सहायक प्रबंधक, जनसंपर्क
खुर्जा

अंतहीन इंतजार,
तड़प और आकुलता,
के बाद ही ये संभव हुआ है,
अभी–अभी,
बरखा की प्रथम बूंदों ने,
विरह दग्ध प्रेयसी धरा का,
सुकोमल तन छुआ है,
मन छुआ है।
बूंदों का माटी से प्रथम मिलन,
फैलती सौंधी खुशबू क्षण–क्षण,
दुंदभि लिए गरजते मेघ,
टर्राते मेंढक देते संदेश,
प्रकृति में प्रणय का नया राग छिड़ा है।
बरखा की नन्हीं बूंदों से,
तृण–तरू,
हर कोंपल, किसलय को,
नवजीवन मिला है,
पा प्रथम स्पर्श बूंदों का,
छुई–मुई के पल्लव सी,
सकुचाई शरमाई धरा के,
रोम–रोम में स्पंदन हुआ है।
हरित श्रृंगार से,
वसुंधरा को नया यौवन मिला है,
अभी–अभी,
बरखा की प्रथम बूंदों ने,
विरह दग्ध प्रेयसी धरा का,
सुकोमल तन छुआ है,मन छुआ है।

****

ख्वाईशों का सफर

कविता

यशवंत सिंह नेगी
कनि. अधिकारी (रा.भा.)
खुर्जा एसटीपीपी, खुर्जा

सरकती हुई सांझ, करीब से आकर बोली,
ये कैसा सफर है, जो कभी खत्म होता ही नहीं।
जिंदगी अब तो थक कर चूर–चूर हो गई है,
पर ख्वाईशें हैं कि, जो कभी खत्म होती ही नहीं।

न जाने कितने ही लोग थे अपने, जीवन सफर में,
देखा मुड़कर पीछे, तो कोई भी साथ में खड़ा नहीं।
उपलब्धियां हासिल करते रहे, ताउम्र कामयाबी की,
भोर हुई आँख खुली, तो दामन में कुछ था ही नहीं।

उम्र गुजर चुकी यहाँ, जिंदगी को सँवारने में,
आखिर पाया कि जिंदगी अभी संभली ही नहीं।

उम्रभर भागते रहे यहाँ–वहाँ, सुकून की जददोजहद में,
उलझनों में ऐसे उलझे रहे कि जिंदगी कभी सुलझी नहीं।

दूर क्षितिज पर, बैठे देखा चाँद को धरती की गोद में,
पर यूँ गले मिलते दोनों को, कभी किसी ने देखा ही नहीं।
ये कैसा रिश्ता है हम दोनों में, धवल चाँद से धरती बोली,
करीब तो हैं क्षितिज पर, किन्तु दूरियाँ कभी मिटी नहीं।

सरकती हुई साँझ, करीब से आकर बोली,
ये कैसा सफर है, जो कभी खत्म होता ही नहीं।
जिंदगी अब तो थक कर चूर–चूर हो गई है,
पर ख्वाईशें हैं कि जो कभी खत्म होती ही नहीं।

****

जीवन

कविता

पंकज दिवाकर
सहायक प्रबंधक(टीबीएम)
पीपलकोटी

ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं ।
न जाने किस दायरे में आकर सिमट गयी है तू, उस दायरे से तुझको खुदागवार करते हैं।
ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि जिस कदर हाथों से रेत फिसलती है, उस कदर फिसलती जा रही है तू।
मौका–ए–मौका दरबदर गिरती जा रही है तू, इन खत्म हो चुके एहसासों को फिर से एहसास करते हैं।
ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि घट रही हैं साँसें मेरी, किन्हीं ख्वाहिशों के अभाव में, बिगड़ रही है सीरत मेरी, अनेकों अनेक दबाव में।
तो बिगड़ चुके इन हालातों को, कुछ करके शर्मसार करते हैं।
ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि ना जाने कबसे इतना समझदार हो गया हूँ मैं, अपनी ख्वाहिशों को जानते हुए भी उनसे बेजार हो गया हूँ मैं।
तो फिर से इन ख्वाहिशों को मुस्कुराकर प्यार करते हैं, ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं,
मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।

कि वो दर्द जो सीने में था जबान पर न आया, होठों पर थी सिसकियां उसकी, मगर आँखों से झलक ना पाया।
तो गुजरे हुए इन लम्हों को, अपनी खुशनुमा ज़िन्दगी का एहसास देते हैं।

ऐ ज़िन्दगी चल आज तुझको भी आबाद करते हैं, मरहूम हुए इस दिल को फिर से शादाब करते हैं।
बढ़ी जाती है तू ऐ मेरी ज़िन्दगी, चल आज से तुझको आज में जीने की कोशिश करता हूँ।

****

समय

कविता

सुजीत कुमार नायक
उप प्रबंधक, सी एंड आई (ओ एंड एम)
खुर्जा एसटीपीपी, खुर्जा

दूर बैठे पर्वत को देखता हूं, तो समझ में यह नहीं आता है,
समय ठहर गया है या पर्वत,
मैं तो भूल गया हूं अपना बचपन, भूल गया हूं कितने दिन और रात,
पैसे कमाने की राह पर, कहीं छोड़ आया हूं अपनों को साथ।

न जाने कौन कहां पे, कर रहा है मेरा इंतजार,
पर मैं तो कर लिया हूं, अपने से हद पार।
आगे मैं जा रहा हूं या समय नहीं चल पा रहा है मुझे पता,
बस यह पर्वत ही मुझे बता सकता है, मेरा समय के साथ नाता।

जो भी मिला राहों में, नहीं समय किसी के पास,
समय को पीछे छोड़ कर, दिल में है बस कमाने की आस।
समय मुझसे आगे है या मैं समय से आगे–पता न चला मुझको,
पर्वत ही बता सकता है, हकीकत क्या है सबको।

जब पूछा मैंने पर्वत को, पर्वत बोला–
बारिश, हवा, पानी सबको मैंने रोका, बस रोक ना पाया समय को,
तू भी खाली हाथ जाएगा एक दिन, पर लौटा ना पाएगा बीते लम्हों को।
अभी भी है तेरे पास समय, जी ले अपनों के साथ,
पता नहीं कब कहां समय छोड़ दे, तेरा भी साथ।

****

ऋत्विक

कविता

मनबीर सिंह राणा
डाटा एंट्री ऑपरेटर
केन्द्रीय संचार विभाग, ऋषिकेश

ऋत्विक, एक नाम नहीं, एक सपनों की कहानी,
जिसमें बसी है उम्मीदों की अनमोल नजानी।

तेरे हर लम्हे में बहे प्रेम का सागर,
जीवन की हर राह बने तेरे लिए बहार।

तेरे दिल में बहती हो मधुर मुस्कान की धारा,
जो सुकून दे जिसकी छांव, हर दुःख से प्यारा।

ऋत्विक, तू है दीपक, जो अंधेरों में रोशनी करे,
हार के बाद भी ना थमे, नई जंग तू मोड़े।

तेरी आँखों में बसे हों सपनों के आसमान,
जहाँ हर सितारा तेरा नाम करे गान।

तेरे कदम छुएं जहाँ, खिले फूलों की बहार,
ऋत्विक, तेरी जिंदगी हो खुशियों का हिसाबदार।

न नलिका, न थके, न निराश हो तू कभी,
तेरे मन की गहराइयों में बसे ख्वाब सजे।

ऋत्विक, तेरा स्वप्न साकार हो पूरा,
तेरी कहानी हो अनमोल, जीवन का सुंदर सूरा।

****

राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम

हिंदी माह/पखवाड़ा/दिवस का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

हिंदी दिवस समारोह

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय ऋषिकेश में सितंबर, 2025 का संपूर्ण माह 'हिंदी माह' के रूप में उत्साह के साथ मनाया गया। इस दौरान राजभाषा विभाग द्वारा 14–15 सितंबर, 2025 को गांधी नगर, गुजरात में आयोजित किए गए हिंदी दिवस के भव्य समारोह एवं 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की ओर से राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार, डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) के साथ अनेक वरि. अधिकारियों एवं राजभाषा से जुड़े अधिकारियों ने भाग लिया।

हिंदी दिवस के अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आर.के.विश्नोई ने निगम में अधिकारियों व कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अपील जारी की, जिसे माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री, श्री मनोहर लाल एवं माननीय केंद्रीय विद्युत राज्य मंत्री, श्री श्रीपाद येसो नाइक की हिंदी दिवस पर जारी की गई अपील के साथ निगम की सभी यूनिटों/कार्यालयों के कर्मचारियों के मध्य परिचालित की गई। ये अपीलें हिंदी दिवस समारोह के दौरान उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों के सम्मुख पढ़कर सुनाई गई।

हिंदी माह का आयोजन

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 'हिंदी माह का उद्घाटन 04 सितंबर को डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में आयोजित की गई हिंदी नोडल अधिकारियों की बैठक के साथ किया गया। उद्घाटन समारोह का आयोजन दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री त्रिपाठी ने हिंदी नोडल अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे हिंदी माह के दौरान आयोजित होने वाले विविध कार्यक्रमों का अपने–अपने विभागों में बढ़–चढ़ कर प्रचार–प्रसार करें तथा अधिकारियों व कर्मचारियों को अधिकाधिक संख्या में इनमें भाग लेने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करें।

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी माह का उद्घाटन

कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए 09 सितंबर को हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 10 सितंबर को हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय "हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) का प्रयोग" रखा गया था। इसी क्रम में 11 सितंबर को नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 12 सितंबर को अनुवाद प्रतियोगिता, 16 सितंबर को स्मृति आधारित लेखन प्रतियोगिता, 17 सितंबर को हिंदी ई–मेल

प्रतियोगिता, 18 सितंबर को आशु–भाषण प्रतियोगिता, 19 सितंबर को राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अतिरिक्त नराकास, हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों ने भी प्रतिभागिता की।

विशेष आयोजनों के अंतर्गत 08 सितंबर 2025 को टीईएस हाईस्कूल के विद्यार्थियों के लिए ''हिंदी दिवस'' विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के 50 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते टीईएस हाईस्कूल के विद्यार्थी

19 सितंबर, 2025 को कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए ''राजभाषा हिंदी–विविध आयाम'' विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 23 सितंबर, 2025 को कार्यपालकों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. नरेश मोहन, हिंदी के विद्वान, साहित्यकार एवं लेखक तथा पूर्व राजभाषा अधिकारी, बीएचईएल, हरिद्वार को प्रमुख संकाय सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

हिंदी माह का समापन तथा पुरस्कार वितरण

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी माह का समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ

हिंदी माह का समापन एवं पुरस्कार वितरण 29 सितंबर, 2025 को किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) के साथ श्री एस.एस.पंवार, मुख्य महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी एवं ओएमएस) एवं श्री आर.आर.सेमवाल, मुख्य महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) ने मंच की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्री एस.एस.पंवार, मुख्य महाप्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी एवं ओएमएस) ने सभी उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई, जिसमें निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों से अनुरोध किया गया था कि वे राजभाषा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का भरसक प्रयास करें। श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने हिंदी माह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया।

हिंदी माह के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं निगम में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अधिकारियों व कर्मचारियों को डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री एस.एस.पंवार

मुख्य महाप्रबंधक (सूचना प्रोद्योगिकी एवं ओएमएस) एवं श्री आर.आर.सेमवाल, मुख्य महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) ने अपने कर–कमलों से पुरस्कृत किया।

08 सितंबर, 2025 को टीईएस हाईस्कूल के विद्यार्थियों हेतु आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में कक्षा–10 की छात्रा, कुमारी सोनम गौड़ ने प्रथम, कक्षा–9 की छात्रा, कुमारी गुनगुन सैनी ने द्वितीय, कक्षा–9 की छात्रा, कुमारी अनन्या बनर्जी ने तृतीय एवं कक्षा–9 की छात्रा, कुमारी दिशु एवं कक्षा–10 की छात्रा, कुमारी निधि चौहान ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने वाले विद्यार्थियों का ग्रुप फोटोग्राफ

09 सितंबर, 2025 को आयोजित हुई हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता में श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी, सहायक टंकक (विधि एवं माध्य.)–प्रथम, श्री आर.पी.रतूड़ी, उप महाप्रबंधक (एमपीएस)– द्वितीय, श्रीमती रश्मि बडोनी, वरि.प्रबंधक (सूचना प्रोद्योगिकी)–तृतीय रहे। साथ ही सुश्री दवनीत कौर, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–भर्ती) एवं श्री अंकित श्रीकोटी, अभियंता (एमपीएस) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

10 सितंबर, 2025 को आयोजित हुई निबंध प्रतियोगिता में श्री आलोक रतूड़ी, अभियंता–निटकॉन (सेवाएं–विद्युत)–प्रथम, श्री अमित कुमार, अवर अभियंता (मा.सं.–प्रशा.) – द्वितीय, डॉ. काजल परमार, सहायक प्रबंधक (केंद्रीय संचार)– तृतीय रहे। साथ ही श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओएमएस) एवं श्री अनूप कुमार ध्यानी, वरि.प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

11 सितंबर, 2025 को आयोजित हुई नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में श्री आनंद कुमार अग्रवाल, उप महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन)–प्रथम, श्री ओजस्वी गुप्ता, सहायक प्रबंधक (परिकल्प–सिविल) – द्वितीय, श्रीमती सरला डबराल, उप प्रबंधक (औषधालय)– तृतीय रहे। साथ ही श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओएमएस) एवं श्री अर्पण कुमार, प्रबंधक (प्रापण) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

12 सितंबर, 2025 को आयोजित हुई अनुवाद प्रतियोगिता में श्री पी.सी.थपलियाल, उप महाप्रबंधक (एमपीएस)–प्रथम, श्री श्रीकांत पंत, वरि.प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) – द्वितीय, सुश्री शैफाली चोपड़ा, उप प्रबंधक (वित्त–सीएसी)–तृतीय रहे। साथ ही श्री तरूण कुमार, अवर अभियंता (मा.सं.एवं प्रशा.) एवं श्री शिव प्रसाद बैलवाल, कनि. अधिकारी (मा.सं. –स्थापना) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

16 सितंबर, 2025 को आयोजित हुई स्मृति आधारित लेखन प्रतियोगिता में श्री ऋतेश शर्मा, उप प्रबंधक (ओएमएस)–प्रथम, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, उप महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन) –द्वितीय, श्री मोहित प्रशांत,

सहायक प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) – तृतीय रहे। श्री राघवेंद्र कुमार श्रीवास्तव, प्रबंधक (एमपीएस) एवं श्री स्वर्णिम पाण्डेय, सहायक प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रमुख अतिथियों से पुरस्कार प्राप्त करते विद्यार्थी

17 सितंबर, 2025 को आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में श्री आनंद कुमार अग्रवाल, उप महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन)–प्रथम, श्री मोहित प्रशांत, सहायक प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत)–द्वितीय, श्री अर्पण कुमार, प्रबंधक (प्रापण)–तृतीय रहे। साथ ही श्री श्रीकांत पंत, वरि.प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) एवं श्रीमती अल्पना शर्मा, कनि.अधिकारी (मा.सं. एव प्रशा.) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

18 सितंबर, 2025 को आशु भाषण प्रतियोगिता में श्री अभिषेक तिवारी, जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार)–प्रथम, श्री हिमांशु जायसवाल, प्रबंधक (विधि एवं माध्य.)– द्वितीय, श्री धर्मेंद्र सिंह भाटी, प्रबंधक (विधि एवं माध्य.)– तृतीय रहे। साथ ही, श्री जी.पी.नौटियाल, निजी सचिव (मुख्य महाप्रबंधक–मा.सं. एवं प्रशा. सचिवालय) एवं श्री देवराज, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–वेलफेयर) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

19 सितंबर, 2025 को टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय एवं नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित हुई **राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** में श्री नीरज शर्मा, अधिकारी, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश – प्रथम, श्री राजीव वर्मा, उप महाप्रबंधक, बीएचईएल, हरिद्वार – द्वितीय, श्री ईशान बनर्जी, प्रबंधक, बीएचईएल, हरिद्वार – तृतीय रहे। श्री राहुल सक्सेना, कनि.अधीक्षक, आईआईटी, रुड़की एवं श्री नितिन कुमार अग्रवाल, कनि. सहायक, आईआईटी, रुड़की ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

पुरस्कार प्राप्त करते अधिकारीगण

वर्ष 2024–25 के दौरान विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों के द्वारा हिंदी में सर्वाधिक कामकाज पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्री आर.आर.सेमवाल, मुख्य महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) – प्रथम, श्री एस.बी.प्रसाद, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) – द्वितीय एवं श्री आर.के.वर्मा, महाप्रबंधक (वाणिज्यिक) –तृतीय रहे।

पुरस्कार प्राप्त करते अधिकारीगण

हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले कार्यपालकों में श्री अमलेन्दु त्रिपाठी, उप महाप्रबंधक (भूगर्भ एवं भूतकनीकी) – प्रथम एवं श्री एस.के.चौहान, महाप्रबंधक (आर.एंड. डी)– द्वितीय रहे।

मूल रूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण एवं आलेखन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों में श्री शिव प्रसाद व्यास, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–स्थापना) एवं श्री राजीव सिंह नेगी, प्रबंधक (सेवाएं)–प्रथम (02), श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओएमएस), श्री गोविंद राज, कनि.अधिकारी (मा.सं.–स्थापना)

एवं श्रीमती अल्पना शर्मा, कनि.अधिकारी (मा.सं.एवं प्रशा.)– द्वितीय (03) तथा श्री खीम सिंह बिष्ट, कनि.अधिकारी, (मा. सं.–नीति), डॉ काजल परमार, सहायक प्रबंधक (केंद्रीय संचार), श्री सी.एल.पठोई, प्रबंधक (विधि एवं माध्य.), श्रीमती शकुंतला बागड़ी, कनि. अधिकारी (वाणिज्यिक) एवं श्री वी.एन.ढौंढियाल, वरि.प्रबंधक (मा.सं.–नीति) ने तृतीय (05) पुरस्कार प्राप्त किया।

विभागों में हिंदी का कार्यान्वयन देख रहे हिंदी नोडल अधिकारियों को भी उनके सराहनीय योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। इस योजनांतर्गत श्री युद्धवीर सिंह, उप महाप्रबंधक (परिकल्प–सिविल), श्री नवीन कुमार, सहायक प्रबंधक (कंपनी सचिवालय), श्री बी.पी.राव, उप प्रबंधक (भू.वि.एवं भू.तक.), श्री श्रीकांत पंत, वरि.प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत), श्री आर.पी.रतूड़ी, उप महाप्रबंधक (एमपीएस), श्रीमती सरला डबराल, उप प्रबंधक (औषधालय), श्री नीरज शर्मा, अधिकारी (औद्योगिक अभियांत्रिकी), श्री राजीव सिंह नेगी, प्रबंधक (सेवाएं), श्री देवेन्द्र सिंह वर्मा, उप प्रबंधक (सेवाएं–संचार), श्री रमेश चौहान, उप प्रबंधक (प्रापण) को पुरस्कृत किया गया।

अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्राप्त करते परि–विद्युत विभाग के अधिकारी व कर्मचारी

टीएचडीसी की हिंदी गृह पत्रिका 'पहल' के वर्ष 2024–25 में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए श्री राघवेंद्र कुमार श्रीवास्तव, प्रबंधक (एमपीएस, ऋषिकेश) को उनके लेख ''ग्रीन हाइड्रोजन– सतत ईंधन'', श्रीमती सिमरन शाहीन, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–अमेलिया कोल माइन) को उनके लेख ''ऊर्जा संरक्षण, हमारी जिम्मेदारी'' के लिए, श्री अविनाश कुमार, सहायक प्रबंधक (जनसंपर्क, पीपलकोटी) को उनके लेख ''राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा देने में संचार और जनसंपर्क की भूमिका'', सुश्री भावना रावत, वरि.प्रबंधक (नियोजन, टिहरी) को उनके लेख ''उत्तराखंड के छोटा धाम, बद्रीनाथ व तृतीय केदार, तुंगनाथ धाम के दर्शन'' एवं श्री आशुतोष कुमार आनंद (मा.सं.–नीति, ऋषिकेश) को उनके लेख ''संकल्प से सिद्धि'' के लिए पुरस्कृत किया गया।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले **परिकल्प–विद्युत विभाग को 2024–25 के लिए अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी** प्रदान की गई। समारोह में मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि यह गर्व का विषय है कि निगम को 14–15 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस के अवसर पर गांधीनगर, गुजरात में नराकास प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत प्रशंसनीय श्रेणी में पुरस्कृत किया गया है। यह टीएचडीसी के लिए गौरव की बात है कि देश भर में फैली लगभग 537 नराकास में नराकास हरिद्वार को इस श्रेणी में पुरस्कृत किया गया है। इसके लिए सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने टीएचडीसी के अधिकारियों व कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे राजभाषा के क्षेत्र में लगातार प्राप्त हो रही उपलब्धियों से प्रेरित और प्रोत्साहित होकर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए समर्पित भाव से एकजुट होकर कार्य करें। नराकास हरिद्वार की अध्यक्षता के नाते टीएचडीसी के अधिकारियों व

पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेते अधिकारी व कर्मचारी

कर्मचारियों से नराकास के सदस्य संस्थानों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने की अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं। सभी कर्मचारी राजभाषा विभाग के दिशा–निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

कारपोरेट कार्यालय के कार्यक्रम के अनुसार ही टिहरी, कोटेश्वर, वीपीएचईपी पीपलकोटी, एनसीआर कार्यालय कौशांबी, खुर्जा एसटीपीपी, खुर्जा, अमेलिया कोल माइन आदि कार्यालयों में भी हिंदी दिवस/सप्ताह एवं हिंदी पखवाड़ा आदि कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किए गए।

****

टिहरी एवं कोटेश्वर परियोजना

हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह में अधिकारियों व कर्मचारियों का ग्रुप फोटोग्राफ

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी एवं कोटेश्वर कार्यालय के कार्मिकों के लिए संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 04 सितंबर 2025 को कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री एल.पी.जोशी, मुख्य महाप्रबंधक, कोटेश्वर परियोजना, श्री एम.के.सिंह, श्री मोहन सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) के साथ हिंदी अनुभाग की सुश्री बानी शुक्ला सहायक प्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती नीरज सिंह, सहायक अधिकारी (राजभाषा) एवं समस्त विभागों के विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में हुआ।

पखवाड़े का विधिवत शुभारंभ दिनांक 04 सितंबर 2025 को किया गया। समारोह का शुभाारंभ कार्यालय प्रमुख द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। तत्पश्चात श्रीमती उर्मिला सैनी द्वारा ज्ञान की देवी माँ सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की गई, जिसने पूरे वातावरण को श्रद्धा से भर दिया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री एल.पी.जोशी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी केवल हमारी राजभाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की पहचान और राष्ट्रीय एकता की सूत्रधार है। उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों और कर्मचारियों से कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग को एक मिशन के रूप में अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और हमें इसका सम्मान तथा उपयोग करना चाहिए, क्योंकि हिंदी संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने का काम करती है। यह हमारी एकता और अखंडता का आधार है इसलिए हमारे राजनेताओं ने इसे संविधान में राजभाषा के योग्य समझा तथा देवनागरी को इसकी लिपि के रूप में मान्यता दी। आज हमें इसकी उपयोगिता और आवश्यकता को समझना चाहिए।

अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्राप्त करते अधिकारी व कर्मचारी

इस अवसर पर पखवाड़े के दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में विस्तार से बताया गया जिसमें टिहरी एवं कोटेश्वर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं का पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया गया एवं प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

****

खुर्जा एसटीपीपी

खुर्जा एसटीपीपी में दिनांक 14.09.2025 से 28.09.2025 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़ा समापन कार्यक्रम के अवसर पर श्री कुमार शरद, कार्यालय प्रमुख ने खुर्जा कार्यालय में हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा हिंदी में काम–काज पर बल दिया। हिंदी पखवाड़ा–2025 के दौरान कार्मिकों के लिए 07 हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जिनमें निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, अनुवाद, वाद–विवाद, काव्य–पाठ, हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं सुलेख प्रतियोगिताएं शामिल हैं। उक्त प्रतियोगिताओं में 38 विजेताओं को कार्यालय प्रमुख ने पुरस्कार प्रदान किए। इसके अतिरिक्त वर्ष 2024–25 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक काम–काज करने वाले "तकनीकी प्रकोष्ठ एवं आई टी" विभाग को अंतर्विभागीय चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई।

कार्यपालक निदेशक, श्री कुमार शरद के कर कमलों से पुरस्कृत अधिकारीगण

पुरस्कृत अधिकारीगण

मूलरूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण/आलेखन करने वाले 10 अधिकारी/कर्मचारियों को भी 10 पुरस्कार प्रदान किए गए। विभागाध्यक्षों को हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिए गए एवं हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले प्रथम, द्वितीय (हिंदी भाषी क्षेत्र–02) तथा प्रथम (हिंदीतर भाषी क्षेत्र–01), द्वितीय (हिंदीतर भाषी क्षेत्र–02) कार्यपालकों को भी पुरस्कृत किया गया।

इसके अतिरिक्त हिंदी दिवस के अवसर पर महिला क्लब, खुर्जा के द्वारा हिंदी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की गई तथा हिंदी का प्रचार–प्रसार करते हुए हिंदी दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम के समापन की घोषणा करते हुए श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) ने खुर्जा कार्यालय में हिंदी के प्रचार–प्रसार और हिंदी काम–काज में गतिशीलता लाने पर अपना वक्तव्य दिया। श्री नेगी ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अधिकारी/कर्मचारियों तथा सभी प्रतिभागियों को हिंदी पखवाड़ा–2025 को सफल बनाने हेतु धन्यवाद संप्रेषित किया गया।

****

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में दिनांक 12 सितंबर से 26 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ श्री नीरज वर्मा, कार्यपालक निदेशक (प्रभारी) के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री नीरज वर्मा ने हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाडे के शुभ अवसर पर समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि यह हमारा संवैधानिक कर्तव्य तो है, कि हम हिंदी में कार्य करें, साथ ही यह हमारा नैतिक कर्तव्य भी है। हममें से अधिकांश 'क' क्षेत्र के निवासी है और हमारी मातृभाषा भी हिंदी है। इसलिए हम अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में ही करें। उन्होंने सभी कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक प्रतिभागिता सुनिश्चित करें। हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 15.09.2025 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता, दिनांक 17.09.2025 को

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते कार्यपालक निदेशक, श्री नीरज वर्मा

नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, दिनांक 19.09.2025 को हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता एवं दिनांक 23.09.2024 को मुहावरे–लोकोक्ति प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 26.09.2025 को एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह बड़े हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक (प्रभारी) ने सभी उपस्थित कर्मचारियों के समक्ष माननीय केंद्रीय गृह मंत्री, भारत सरकार, माननीय विद्युत एवं आवासन कार्य मंत्री, श्री मनोहर लाल एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई। प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को कॉर्पोरेट कार्यालय, ऋषिकेश से प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुसार पुरस्कृत किया गया। कार्यपालक निदेशक (प्रभारी) ने पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग करने हेतु आभार प्रकट किया तथा भविष्य में प्रतिभागियों की संख्या बढाने के लिए प्रेरित भी किया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार, विदयुत मत्रांलय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2025–26 के अनुपालन में एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में हिंदी पत्राचार शत–प्रतिशत के करीब है। सभी अधिकारी व कर्मचारी शत प्रतिशत कार्य हिंदी में करना सुनिश्चित करें जिससे हिंदी पत्राचार का निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

कार्यपालक निदेशक (प्रभारी) के कर कमलों द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। उन्होंने प्रतियोगिता के विजेता कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 02–02 प्रोत्साहन पुरस्कारों से पुरस्कृत किया। इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग द्वारा जारी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत मूल रुप से टिप्पणी लेखन करने वाले 10 कर्मचारियों, हिंदी में सर्वाधिक कामकाज करने वाले विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों एवं हिंदी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

****

वीपीएचईपी पीपलकोटी

विष्णुगाड़–पीपलकोटी जल विद्युत परियोजना (वीपीएचईपी) में 10 सितंबर से 25 सितंबर, 2025 तक हिंदी पखवाड़ा उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवधि के दौरान परियोजना के विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने विविध हिंदी प्रतियोगिताओं में सक्रिय भागीदारी करते हुए अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पखवाड़ा के समापन अवसर पर 08 अक्टूबर 2025 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 58 विजेताओं को विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया।

अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्राप्त करते मा.सं. एवं प्रशा. विभाग के अधिकारी व कर्मचारी

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजय वर्मा, परियोजना प्रमुख (वीपीएचईपी) ने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि "राजभाषा हिंदी के प्रयोग से न केवल सरकारी कार्य में सरलता आती है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय गौरव का भी प्रतीक है।" उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग करने का आग्रह किया। मुख्य अतिथि ने पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वर्ष 2024–25 के दौरान उत्कृष्ट हिंदी कार्य निष्पादन पर आधारित विभागीय पुरस्कार भी प्रदान किए गए। वर्ष में सर्वाधिक हिंदी में आधिकाधिक कार्य संपादन हेतु मानव संसाधन एवं प्रशासन विभाग को चल वैजयंती ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

****

अमेलिया कोल माइन

अमेलिया कोल माइन, सिंगरौली में दिनांक 14 सितंबर से 29 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ श्री राजीव गोविल, मुख्य महाप्रबंधक के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री गोविल ने हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़े के शुभ अवसर पर समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की अपील की। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय विद्युत एवं आवासन मंत्री, श्री मनोहर लाल एवं टीएचडीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील पढ़ी गई। विजेता कर्मचारियों को 29 सितंबर को आयोजित समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कार वितरण का दृश्य

****

टुस्को लिमिटेड

पुरस्कार वितरण का दृश्य

टुस्को लिमिटेड, लखनऊ कार्यालय एवं ललितपुर/चित्रकूट/झाँसी सोलर पार्क परियोजना में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 सितम्बर से 28 सितम्बर तक किया गया। इस दौरान टुस्को के कर्मचारी, एफ.टी.बी एवं निटकॉन कर्मचारियों तथा तीनों परियोजनाओं में कार्यरत कर्मचारियों के साथ–साथ निकटतम स्कूल के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजेताओं को 28 सितंबर को समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

****

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में दिनांक 23 सितंबर, 2025 को कार्यपालकों हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 40 कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की। इसका उद्घाटन डॉ. श्री अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री एस.बी.प्रसाद, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) द्वारा कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा) एवं संकाय सदस्य डॉ. नरेश मोहन का स्वागत प्लांट भेंट कर किया गया। इस अवसर पर डॉ. नरेश मोहन, वक्ता एवं विद्वान द्वारा "हिंदी का बदलता स्वरूप एवं कार्यालय में हिंदी का प्रयोग" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया। द्वितीय सत्र में श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा ई–टूल्स एवं कम्प्यूटरों में हिंदी में कामकाज विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। तत्पश्चात श्री शर्मा द्वारा टिप्पण एवं आलेखन का अभ्यास कराया गया।

कार्यशाला में व्याख्यान देते आमंत्रित संकाय सदस्य डॉ. नरेश मोहन

अधिकारियों को संबोधित करते मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी

23 दिसंबर, 2025 को महाप्रबंधक/अपर महाप्रबंधक स्तर के अधिकारियों के लिए कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) द्वारा की गई। सर्वप्रथम श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं समस्त वरि. अधिकारियों का स्वागत किया गया। डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए समय–समय पर संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए जाने वाले राजभाषा निरीक्षण में पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा हिंदी तिमाही रिपोर्ट के प्रोफार्मा के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। साथ ही राजभाषा के नियमों एवं अधिनियमों के विषय में भी चर्चा की। कार्यशाला में सभी अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की।

****

टिहरी एवं कोटेश्वर

टिहरी कार्यालय में दिनांक 22.08.2025 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, श्री डी.पी.पात्रो द्वारा की गई। संकाय सदस्य डॉ. रमा रानी सिंह, (केंद्रीय हिंदी समिति–पूर्व सदस्य) एवं डॉ एम.आर.सकलानी, (वरिष्ठ उप निदेशक, आयकर विभाग–सेवानिवृत्त) द्वारा कार्यशाला के सत्र लिए गए। कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय द्वारा राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने कार्यालय में

अपना कार्य शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। हिंदी कार्यशाला के संकाय सदस्य, डॉ. रमा रानी सिंह ने उपस्थित प्रतिभागियों को 'राजभाषा नीति/नियम/अधिनियम' एवं 'सरल हिंदी का प्रयोग' पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान देते हुए अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ एम.आर.सकलानी द्वारा नोटिंग और ड्राफ्टिंग का अभ्यास कराया गया साथ ही 'राजभाषा हिंदी एवं तकनीकी शब्दावली' पर महत्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण दिया गया।

हिंदी कार्यशाला में अधिकारियों व कर्मचारियों का संकाय सदस्यों के साथ ग्रुप फोटो

दिसंबर में समाप्त होने वाली तिमाही के दौरान दिनांक 17.11.2025 को टिहरी एवं कोटेश्वर कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री मोहन सिंह द्वारा की गई। मुख्य संकाय सदस्य डॉ संजीव नेगी, प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून एवं आंतरिक संकाय श्री संतोष टेलकीकर, सहायक प्रबंधक (हिंदी), टीएचडीसीआईएल ऋषिकेश द्वारा कार्यशाला के सत्र लिए गए। कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने सभी प्रतिभागियों से अपना समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने का आग्रह किया।

अधिकारियों को संबोधित करते श्री मोहन सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

****

खुर्जा एसटीपीपी

खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में 25 सितंबर, 2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, वरि. प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशा.) ने आमंत्रित वक्ता, श्री प्रेम सिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा विभाग) को प्लांट भेंट कर सम्मानित किया। कार्यशाला को दो सत्रों में संचालित किया गया। प्रथम सत्र में पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान तथा द्वितीय सत्र में पत्राचार के प्रकार व टिप्पण–आलेखन की विस्तृत जानकारी दी गई। श्री दिलीप कुमार द्विवेदी ने कार्यशाला की उपयोगिता पर बल देते हुए उपस्थित प्रतिभागियों को अधिक से अधिक हिंदी में काम–काज करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। श्री यशवंत सिंह नेगी, कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी) ने कार्यशाला का संचालन किया। कार्यशाला के समापन अवसर पर श्री नेगी ने आमंत्रित वक्ता, श्री प्रेम सिंह जी का आभार व्यक्त किया और कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों का धन्यवाद संप्रेषित किया।

कार्यशाला आयोजन का दृश्य

****

हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

हिंदी संगोष्ठी में व्याख्यान देते श्री जी.के. फरलिया

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में दिनांक 19.09.2025 को ''राजभाषा हिंदी–विविध आयाम'' विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के वरिष्ठतम सदस्य श्री जी.के.फरलिया उपस्थित थे। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर श्री एस.बी.प्रसाद, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) ने उनका स्वागत प्लांट एवं शॉल भेंट कर किया। श्री फरलिया ने राजभाषा हिंदी के विविध आयामों पर प्रकाश डाला तथा प्रतिभागियों का मार्ग दर्शन किया। उन्होंने कहा कि ''राजभाषा हिंदी–विविध आयाम'' में राजभाषा हिंदी के विभिन्न संदर्भों में व्यापक एवं बहुआयामी पहलु शामिल हैं। उन्होंने हिंदी की संवैधानिक स्थिति, राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका, विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का बढ़ता उपयोग आदि के बारे में बताया। अंत में श्री फरलिया ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन का प्रतिशत एक बार किसी स्तर पर पहुंचने के बाद नीचे नहीं आना चाहिए। हिंदी सलाहकार समिति की बैठकों में लिए गए निर्णयों को सभी अधिकारियों व कर्मचारियों के मध्य परिचालित किया जाना चाहिए ताकि सभी लोग हिंदी के प्रति समर्पित हो सकें।

हिंदी नोडल अधिकारियों एवं राजभाषा अधिकारियों हेतु एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के हिंदी नोडल अधिकारियों एवं यूनिट कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों के लिए 21 नवंबर, 2025 को एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। डॉ. त्रिपाठी ने हिंदी नोडल अधिकारियों एवं अन्य यूनिटों से आए राजभाषा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह हिंदी संगोष्ठी राजभाषा के कार्यान्वयन में आ रही कठिनाईयों के निदान हेतु विचार–विमर्श का एक अच्छा मंच साबित होगी।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अधिकारी व कर्मचारी

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में विभिन्न परियोजनाओं से आए हुए राजभाषा अधिकारियों एवं कारपोरेट कार्यालय के हिंदी नोडल अधिकारियों द्वारा अपना–अपना परिचय देकर अपनी यूनिटों एवं विभागों में हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपने योगदान एवं विभाग में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया गया। इस अवसर पर सभी ने 22 अगस्त, 2025 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के खुर्जा कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), बुलंदशहर की 28वीं बैठक में राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता–2025 के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर खुर्जा एसटीपीपी की टीम को बधाई दी।

डॉ. अमरनाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) के साथ प्रतिभागी अधिकारियों व कर्मचारियों का ग्रुप फोटोग्राफ

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा राजभाषा संबंधी गतिविधियों पर विस्तारपूर्वक विचार–विमर्श किया गया। श्री शर्मा ने राजभाषा विभाग के नवीनतम वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के नए लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी। श्री शर्मा ने भारत सरकार की विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। द्वितीय सत्र में श्री धीरेन्द्र रांगड, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय साहित्य संगम द्वारा आधुनिक दर्शनशास्त्र के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया। अंतिम सत्र में श्री एस.बी.प्रसाद, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) द्वारा ''मानव संसाधन–सबके लिए'' विषय पर व्याख्यान दिया गया। उन्होने बताया कि मानव संसाधन किसी भी संगठन की रीढ़ है।

प्रतियोगिताओं का आयोजन

बोल वचन प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतियोगिता के आयोजन का दृश्य

कारपोरेट कार्यालय के कर्मचारियों के लिए दिनांक 25 जुलाई, 2025 को 'बोल वचन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता को आयोजित करने का उद्देश्य अधिकारियों व कर्मचारियों में हिंदी भाषा बोलने एवं उसमें प्रयुक्त होने वाले शब्दों का सही उच्चारण करने के प्रति प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को उसी समय हिंदी का एक गद्यांश या पद्यांश पढ़ने को दिया गया। विजेताओं का निर्णय 02 सदस्य समिति के द्वारा किया गया। विजेता रहे अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 02 प्रोत्साहन पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पुरस्कार से प्रोत्साहित किया गया। यह एक अनूठी पहल थी, जो कि काफी रोचक रही। इसमें 54 अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।

****

हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेते अधिकारी एवं कर्मचारी

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में दिनांक 16.12.2025 को 'भागीरथी भवन' में हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्नों के साथ–साथ सामान्य ज्ञान, करंट अफेयर्स से संबंधित ज्ञानवर्धक प्रश्न शामिल किए गए थे। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य खेल–खेल में राजभाषा कार्यान्वयन की जानकारी देना एवं हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार करना था। प्रत्येक प्रश्न पर सही उत्तर देने वाले प्रतिभागी को प्रोत्साहन के रूप में नगद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई। इस प्रतियोगिता में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संख्या उत्साहवर्धक रही। कार्यक्रम का संचालन श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। श्री संतोष टेलकीकर, सहा. प्रबंधक (राजभाषा) ने पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रतिभागियों से प्रश्न पूछे। प्रतियोगिता उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई।

नराकास, हरिद्वार की 40वीं अर्धवार्षिक बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 40वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन श्री शैलन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में 18 अगस्त, 2025 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के रसमंजरी सभागार में किया गया। बैठक में नराकास के माननीय अध्यक्ष एवं टीएचडीसीआईएल के निदेशक (कार्मिक), शैलेन्द्र सिंह, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की प्रो.डॉ.मीनू सिंह, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रूड़की के निदेशक, डॉ.वाई.आर.एस.राव, गृह मंत्रालय, राजभाषा के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–2 के उप निदेशक, श्री छबिल कुमार मेहेर, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) श्री अमरनाथ त्रिपाठी ने मंच की शोभा बढ़ाई। सभी प्रमुख अतिथिगणों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

बैठक में दीप प्रज्ज्वलन के दौरान माननीय अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र सिंह के साथ विभिन्न संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों का ग्रुप फोटोग्राफ

बैठक में समिति के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने छमाही के दौरान समिति के तत्वावधान में आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी दी तथा राजभाषा से संबंधित नवीनतम जानकारियों से अवगत कराया। इस अवसर पर छमाही के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नराकास, हरिद्वार की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान प्रकाश'' के 13वें अंक का विमोचन भी किया गया। बैठक में समिति सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने नराकास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों/कार्यशालाओं/प्रतियोगिताओं/बैठकों में भाग लेने, नराकास के भावी कार्य योजनाओं, राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए आदेशों एवं दिशा–निर्देशों के बारे में जानकारी दी।

राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री छबिल कुमार मेहर ने सभी उपस्थित संस्थानों से भारत सरकार को राजभाषा नीति अधिनियमों एवं नियमों का अक्षरशः अनुपालन करने का अनुरोध किया तथा हिंदी के मानक पद यथाशीघ्र भरने का अनुरोध भी किया।

समिति के अध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र सिंह ने अपने संबोधन में सभी सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों का उनके प्यार एवं सम्मान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस समिति की अध्यक्षता करते हुए सभी संस्थानों का सहयोग प्राप्त होता रहा। उन्होंने सभी संस्थानों से राजभाषा विभाग द्वारा 14–15 सितंबर, 2025 को गांधीनगर, गुजरात में आयोजित किए जाने वाले हिंदी दिवस एवं 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता करने का भी अनुरोध किया।

****

नराकास, टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक संपन्न

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन 12 दिसंबर, 2025 को किया गया। बैठक की अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक (टी.सी), श्री एम.के.सिंह की अध्यक्षता में की गई। बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद, राजभाषा विभाग के श्री छबिल कुमार मेहर, उप निदेशक भी उपस्थित थे। बैठक में नगर के कार्यालयों के सदस्य, हिंदी नोडल अधिकारी एवं समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। बैठक के शुभारंभ पर अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा हिंदी के सशक्त, प्रभावी एवं निरंतर कार्यान्वयन पर बल देते हुए सभी उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात सदस्य सचिव द्वारा पूर्व बैठक की कार्यवाही का विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसे समिति द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। बैठक के दौरान नगर के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई। कार्यालयीन पत्राचार, टिप्पणियां, रिपोर्ट, ई–मेल, सूचना पट्ट, वेबसाइट एवं अन्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग की सराहना की गई। उल्लेखनीय है कि अनेक कार्यालयों ने राजभाषा कार्यान्वयन में अनुकरणीय कार्य करते हुए निर्धारित लक्ष्यों से आगे बढ़कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने एवं उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देते हुए बैठक के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सदस्य संस्थानों को कुल पांच शील्ड प्रदान की गईं। यह सम्मान उन कार्यालयों को प्रदान किए गए जिन्होंने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग, गुणवत्ता, निरंतरता एवं नवाचार के माध्यम से सराहनीय योगदान दिया। नराकास की गतिविधियों के दौरान कुछ कार्यालयों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया, जिनमें विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते समिति के अध्यक्ष श्री एम.के. सिंह एवं अन्य अधिकारीगण

अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी पुरस्कार प्राप्त कार्यालयों एवं प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई दी गई तथा अन्य कार्यालयों को भी इनसे प्रेरणा लेकर राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि यह सम्मान उपलब्धियों का प्रतीक होने के साथ–साथ भविष्य में और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा भी है।

****

हास-परिहास

पापा : आज के टेस्ट में तुम्हारे कितने नंबर आए?
छोटू : मोटू से 20 नंबर कम।
पापा : अच्छा मोटू के कितने नंबर आए?
छोटू : 20 नंबर।

पत्नी (पति से): कल हमारी शादी को पाँच साल पूरे हो जाएंगे।
पति : तो फिर दुबारा चुनाव होंगे या फिर यही सरकार चलेगी।

चिंटू : तू पागल है क्या?
मिंटू : क्यों क्या हुआ?
चिंटू : ये मेरी कैसी फोटो खींच दी, लड़की वालों को भेजनी थी, इसमें पीछे कुत्ता आ गया।
मिंटू : हाँ, तो भाई बता दिया उन्हें कि तू आगे वाला है।

एक औरत ने मंदिर में अपने पति के लिए मन्नत मांग कर धागा बांधा.....फिर कुछ सोचकर एकदम से धागा वापस खोल दिया ।
पति : धागा क्यों खोल दिया?
पत्नी : आपके लिए मन्नत मांगी थी कि आपकी सारी मुसीबतें दूर हो जाएं, फिर ख्याल आया कहीं मैं ही न निपट जाऊँ.....

सैलरी कम बताओ तो रिश्तेदार इज्जत नहीं करते और ज्यादा बताओ तो उधार मांग लेते हैं, समझ नहीं आता इज्जत बचाऊं या फिर पैसा.....

पप्पू : भाई साहब, जूते कहां मिलेंगे?
गप्पू : जूते तो हर जगह मिल जाएंगें, बस आप में वो गुण होने चाहिए.....

36 के 36 गुण मिलते थे हमारे फिर भी घर वालों ने मना कर दिया
बोले जैसा नालायक बेटा है, वैसी बहू नहीं चाहिए हमें.....

डॉक्टर : इंजेक्शन लिखा था, क्यों नहीं खरीदा ?
मरीज : शनिवार को सुई नहीं खरीदते, शनिदेव नाराज हो जाएंगे....
डॉक्टर : खरीद लो वरना यमराज नाराज हो जाएंगे.....

पत्नी : मैं हर रोज पूजा करती हूं, काश एक दिन श्री कृष्ण के दर्शन हो जाएं...
पति : इसमें क्या है बस एक बार मीराबाई बन के जहर पी लो, श्रीकृष्ण क्या, सारे भगवानों के दर्शन हो जाएंगे।

लेखक अपनी पत्नी से: प्रिये तुम्हें मेरी कौन सी बुक प्रिय है.....?
पत्नी: चेक बुक

मनचाहा पति पाने के लिए :
हरतालिका तीज, करवाचौथ, सावन सोमवार, शिवरात्रि व्रत आदि.....
और मनचाही पत्नी पाने के लिए CAT, UPSC, SSC, NEET, CRE, GMAT, आदि.....
बहुत नाइंसाफी है रे.....

पत्नी : कल जो भिखारी आया था, वो बहुत बदतमीज था।
पति : क्यों क्या हुआ?
पत्नी : कल मैने उसे खाना दिया था और आज वो मुझे एक किताब देकर गया है।
पति : कौन सी किताब?
पत्नी : खाना पकाना सीखें.....

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार प्रशंसनीय श्रेणी में सम्मानित

(टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड का कारपोरेट कार्यालय कर रहा है इस समिति का संचालन)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा गांधी नगर, गुजरात में 14–15 सितंबर, 2025 को आयोजित हुए हिंदी दिवस एवं 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में 15 सितंबर, 2025 को प्रशंसनीय श्रेणी में सम्मानित किया गया।

यह सम्मान श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, आईएएस, राजभाषा विभाग के कर–कमलों से समिति के अध्यक्ष, डॉ अमर नाथ त्रिपाठी, मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड एवं समिति के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक(राजभाषा) ने प्राप्त किया। इस अवसर पर मंच पर डॉ अम्लान त्रिपाठी, मुख्य आयकर आयुक्त, मुंबई, श्री संतोष कुमार झा, सीएमडी, कोंकण रेलवे कारपोरेशन लि., डॉ देबदत्त चांद, प्रबंध निदेशक, बैंक ऑफ बड़ौदा, श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, प्रबंध निदेशक, आईओबी एवं श्री के.पी.शर्मा, संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग उपस्थित थे।

विदित ही है कि नराकास हरिद्वार देश की सबसे बड़ी नराकासों में से एक है जिसमें 70 केंद्र सरकार के संस्थान शामिल हैं। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश को इसके संचालन का दायित्व सौंपा हुआ है। जिसका निर्वहन टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड पिछले 08 वर्षों से सफलतापूर्वक कर रही है।

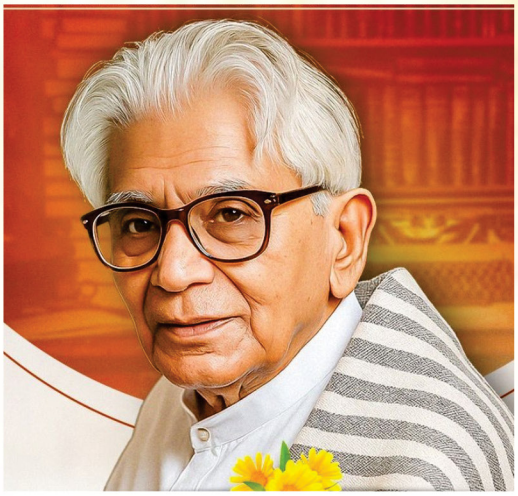

शिव मंगल सिंह सुमन
पद्म भूषण, पद्म श्री से सम्मानित
(05 अगस्त, 1915–27 नवंबर, 2002)

“जब कठिन कर्म पगडंडी पर, राही का मन उन्मुख होगा
जब सब सपने मिट जाएँगे, कर्तव्य मार्ग सन्मुख होगा
तब अपनी प्रथम विफलता में, पथ भूल न जाना पथिक कहीं!

जब चिर–संचित आकांक्षाएँ, पलभर में ही ढह जाएँगी
जब कहने–सुनने को केवल, स्मृतियाँ बाकी रह जाएँगी
विचलित हो उन आघातों में, पथ भूल न जाना पथिक कहीं!”

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org